—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० ग़ुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/–
वार्षिक	रु० 100/–
विशेष वार्षिक	रु० 500/–
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त
व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

मई, 2005 वर्ष 4 अंक 3

बेटे को वसीयत

हमेशा ख़ुदा से डरते रहो और ख़ुदा के सिवा किसी से न डरो और न उसके सिवा किसी से उम्मीद रखो, और अपनी तमाम ज़रूरियात अल्लाह के सुपुर्द कर दो, सिर्फ़ उसी पर भरोसा रखो और सब कुछ उसी से मांगो, ख़ुदा के सिवा किसी पर भरोसा न रखो, तौहीद इख़्तियार करो, तौहीद पर सबका इजमाअ़ है।

(शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

H.I.Computer Institute - 9335214913

विषय एक नज़र में

•	ग्यारहवीं शरीफ़	सम्पादकीय..... 3
•	कुर्आन की शिक्षा	मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
•	प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी 6
•	हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नजर में	मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी 7
•	सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी	इदारा 11
•	सुन्नत और बिदअ़त	मौ० मुजीबुल्लाह नदवी..... 12
•	क़ाज़ी हम्मास बिन मरवान	डा० मु० इज्तिबा नदवी 13
•	इन्सानी जिन्दगी में इबादत	मु० हारून रशीद..... 15
•	क़ादियानी प्रचारक का कबूले इस्लाम	अल अहरार 16
•	रह़मान के बन्दे	अब्दुर्रशीद खैरानी 17
•	ईसाले सवाब	इदारा 19
•	आपके प्रश्नों के उत्तर	इदारा..... 20
•	संक्षिप्त इस्लामी तारीख	मौ० अब्दुस्सलाम किदवई नदवी 22
•	जिन्न क्या कर सकते हैं ?	अबू मर्गूब..... 24
•	इस्लाम की कहानी	अब्दुल कुद्दूस रूमी 25
•	उम्मुल मोमिनीन हजरत सौदा (रज़ि०)	सादिका तस्नीम फारूकी..... 26
•	मंजूम दुआ़	अमतुल्लाह तस्नीम..... 28
•	फ़िरऔ़न की बीवी और उसकी बेटी की दासी	मास्टर लतीफ अहमद एम०एम० 28
•	बच्चों की तालीम	डा० शबाना नजीर..... 29
•	बच्चों की नश्वनमा में फल	इदारा 30
•	दारूल उलूम का शिक्षा में योगदान	हैदर अली नदवी 31
•	हिदायत अल्लाह के इख़्तियार में	मु० गुफरान नदवी 32
•	पृथ्वी की बनावट	हबीबुल्लाह आज़मी 33
•	सूरज चल रहा है	इदारा 34
•	सीरतुन्नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम)	अल्लामा शिब्ली नोमानी 35
•	ख़रबूज़ा	मु० गुफरान नदवी 39
•	गुमशुदा	महेन्द्र तिवारी 39
•	अन्तर्राष्ट्रीय समाचार	हबीबुल्लाह आज़मी..... 40

❑❑❑

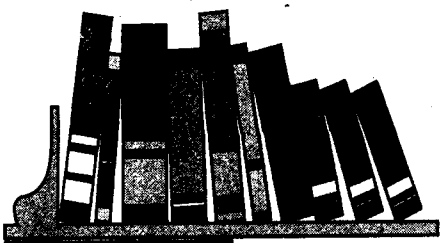

ग्यारहवीं शरीफ़

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

वालिदा ने कहा : बारा वफ़ात तो गुज़र गई। अल्लाह का शुक्र है घी बेचकर मिठाई आ गई थी, इधर भैंस ने दूध भी कम कर दिया है, फिर बच्चों में दूध बच भी न पाया मुश्किल से आधा सेर घी होगा। अगर दाल न बघारी जाए तब भी आधा सेर घी बारह आने ही का तो बिकेगा। ग्यारहवीं सर पर है कम से कम एक रूपये की मिठाई तो आए।

नहीं दाल ज़रूर बघारी जाएगी एक रूपये के चावल बेच डालो, झगडू गडरया चावल मांग रहे थे, वालिद साहिब ने जवाब दिया।

दोपहर बाद झगडू गडरया बुलाये गये राम भोगधान का पुराना चावल एक रूपये के नौ सेर के हिसाब से तीन रुपयों के चावल तौले गये। मैं सिर्फ़ चावल खाता था रोने लगा वालिदा ने चुम्कार कर समझाया अरे रोते क्यों हो देखो इस मटकी में मुटमुरी का चावल है, इसमें राम **समोखन का** चावल है क्या तुम को चावल न मिलेगा आख़िर ग्यारहवीं भी तो होना है। **मैं चुप हो गया।**

दोरोज़ बाद ग्यारहवीं महीने की ग्यारह तारीख़ आ गई वालिद साहिब **खेत में काम** करने चले गये थे, ख़ान्दान की फीकी नानी ग्यारहवीं की मिठाई लेने रूदौली जा **रही थीं। वालिदा** ने कहा दौड़ के जा अपने अब्बा से रूपया मांग ला और फीकी नानी के साथ **रूदौली से** मिठाई ले आ। मैं भाग कर गया वालिद साहिब को बताया उन्होंने टेंट (पेडू पर धोती **की लपेट)** से निकाल कर चान्दी का एक रूपया दिया जिस पर मलिका विक्टोरिया की तस्वीर बनी थी। मैं ख़ुश खुश आया और फीकी नानी के साथ रूदौली गया। जहां तक मुझे याद है एक रूपये की डेढ़ या दो सेर मिठाई मिली थी। दुकान के पास एक मौलवी साहिब चौकी बिछाए बैठे थे उन्होंने फातिहा दी, अपना हिस्सा निकाला बाक़ी मिठाई लेकर हम घर आ गये बहन, भाई, वालिदैन चार नफ़र छक कर मिठाई खाई गई। कुछ वालिदा ने अलग रख दी जिसमें से कई रोज़ तक सिर्फ़ मुझे खिलाती रही। यह मुसलमान होने की एक पहचान थी, न अज़ान न नमाज़, गांव में एक कच्ची मस्जिद थी जो बरसात की नज़र होकर ज़मीन पर आ चुकी थी सिर्फ़ पच्छिम वाली दीवार अपने ताकों के साथ खड़ी थी जिसे औरतें जब तब लेवा लगा कर पोत दिया करती थीं इसलिये कि वह उन के ताक़ भरने में काम आती थी, मर्द चूंकि नमाज़ काइम करने की हिम्मत न रखते थे इसलिये मस्जिद बनाने की फ़िक्र भी न करते थे, वर्ना कच्ची दीवारें उठाकर धन्नियों पर छत डालने में सिर्फ़ उन की मेहनत दरकार थी।

उस वक़्त मुसलमान होने की पहचान यही थी कि मुहर्रम में ताज़िया रख लें रबीउलअव्वल में बारहवीं, रबीउस्सानी में ग्यारहवीं, रजब में कून्डे, १४ शाबान को हल्वों पर फातिहा, मज़ारों के मेलों में शिरकत, नमाज़ का ख़याल भी नहीं, रमज़ान के रोज़े, इख़्तियारी, ज़कात का ज़िक्र तक नहीं ख़ूब माल हो तो उन मालदारों में से कोई कोई हज्ज कर आता, हज्ज से लौटता तो अब वह नमाज़ पढ़ता, अब वह रोज़े न छोड़ता लेकिन घरवालों से दीनी कामों की पाबन्दी का मुतालबा न करता।

न तब्लीग़ी जमाअत, न जमाअते, इस्लामी, न बरेलवी उलमा की सरगर्मियां न नदवीयों की कोशिशें न देव बन्दियों की दौड़ धूप। दीहातों में यह कुछ भी न था। बस ताजिया, फातिहा, मीलाद,

उर्स और मज़ारों पर हाज़िरी मुसलमान होने की पहचान थी।

ब्रिटिश दौर में तालीम (शिक्षा) आम न थी ख़ास तौर से गांवों में, कहीं कही तो गांव का गांव अंगूठा छाप होता। बड़े किसानों और जमींदारों के बच्चे ही पढ़ते थे। आज़ादी के बाद जहां तेज़ी से आबादी बढ़ी पढ़ाई की तरफ़ भी लोगों का ध्यान गया। मुसलमानों में भी बेदारी आई दीनी मकातिब खुलने लगे। मुसलमान बच्चों के लिये बहुत से दीनी रिसाले और किताब्चे लिखे जाने लगे और अब ईमाने मुफ़स्सल ईमाने मुजमल, कल्म–ए–तय्यिबा, कल्म–ए–शहादत के मतालिब बच्चे पढ़ने और याद करने लगे और घरों में उन के तज़किरे होने लगे। अब्बा जान जिन को निकाह् के वक्त सातों कल्मे पढ़ाए गये तो पसीने छूट गये थे अब अपने बच्चे बच्चियों से मतलब के साथ बार बार सुनने लगे। वज़ू, ग़ुस्ल, नमाज़ वग़ैरह की तफ़्सीलात आम होने लगीं, अरकाने इस्लाम, आम जिन्दगी के मसाइल भी सामने आने लगे, बिदअ़त व सुन्नत के बयानात भी खुल कर आने लगे। एक तरफ़ मदारिस व मकातिब की ख़िदमात तो दूसरी जानिब जमाअ़ते तबलीग़ और जमाअ़ते इस्लामी की सरगर्मियां ग़रज़ कि साफ़ सुथरा इस्लाम लोगों के सामने आने लगा जिस में ईसाले सवाब का जिक्र तो था लेकिन मुरव्वजा फातिहा की इस्लाह् की गई थी, ताज़िया दारी की तो कोई गुजाइश ही न थी, मुरव्वजा मीलाद भी एक नई चीज़ समझी जाने लगी, ज़ियारते क़ुबूर का हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का बताया हुआ तरीक़ा तो था लेकिन मुख्वजः उर्स, क़व्वाली क़ब्रों पर चढ़ावे की गुंजाइश न थी जब कि अ़वाम इन में मुबतला थे। वह यह तो समझ गये कि यह काम हमारे हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने नहीं सिखाये लेकिन बाप दादा की तक़्लीद में करते करते उन से एक गोना महब्बत हो गई थी इसलिये उन के तर्क में उनको तक्लीफ़ महसूस हुई।

लेकिन अल्लाह भला करे हमारे कुछ पढ़े लिखे भाइयों का (और उन पर हक़ वाज़ेह करे) वह उन सारे दीनी निस्बत वाले कामों की ताइद में उठ खड़े हुए जो हमारे हुज़ूर सल्लाल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के सिखाए हुए न थे मगर मुसलमानों में राइज हैं। फिर क्या था वह अ़वाम जिन को यह नये काम छोड़ना दुश्वार हो रहा था वह उन के झन्डे तले आ गये। लेकिन चूंकि बिदअ़ात रोकने वालों की दलीलें मज़बूत थीं जो इन की बात सुनता तो चाहे बिदअ़ात छोड़ न पाए इन की दलीलों के सामने हथयार ज़रूर डाल देता ऐसी सूरत में उन की बातें सुनने ही से रोक दिया गया लेकिन जो पढ़े लिखे नेक लोग हैं वह आज भी बराबर बिदअ़ात (दीन में दाख़िल की गई नई बातों) को छोड़ रहे हैं।

जब मैंने पढ़ा कि शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर (रह०) बड़े बुज़ुर्ग और आ़लिम थे उनकी लिखी हुई अ़रबी में किताबें हैं, गुन्यतुत्तालिबीन उनकी मशहूर किताब है, उनके वअ़ज़ कई जिल्दों में हैं। उनके पढ़ने से मालूम हुआ कि वह बड़े पाये के हंबली बुजुर्ग थे, वह नमाज़ में रफ़अ़े यदैन करते थे, अलहम्दु के ख़त्म पर जेहरी नमाज़ों में ज़ोर से आमीन कहते थे, वह नमाज़ों में हाथ सीने पर बांधते थे, वह बिदआ़त के सख़्त मुख़ालिफ़ थे। उनका वअ़ज़ इतना मुअस्सिर (प्रभावशाली) होता कि कभी–कभी लोगों की चीखें निकल जातीं और उनकी जान निकल जाती लेकिन उन्होंने कभी अपने पीर की या मौला अ़ली (रज़ि) की फातिहा इस तरह नहीं दी न इस तरह तबर्रुक खाया खिलाया जिस तरह लोग आज उनकी फातिहा देते और तबर्रुक खाते खिलाते है बस मेरी ग्यारहवीं शरीफ़ में तब्दीली आ गई। अब मैंने ह़ज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) की अ़कीदत व महब्बत में उनके लिए ईसाले सवाब को अपने मामूल में दाख़िल कर लिया और ग्यारह रबीउ़ल अव्वल को जब कोई मिठाई लेकर मेरे पास आता है कि बड़े पीर साहिब की फातिहा पढ़ दीजिए

(शेष पृष्ठ ११ पर)

क़ुरआन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

कीना :

और ऐ अल्लाह ! हमारे दिलों में ईमान वालों का कीना मत रख। (अल्हश्र : १०)

किसी की दुश्मनी को दिल में बाकी रखने को बुग्ज़ और कीना कहते हैं। यह ऐसी बुरी चीज़ है कि जो इस से पाक रहने की दुआ मांगा करते हैं अल्लाह तआला ने उन की तारीफ़ फ़रमाई है। जन्नत में लोग आपस में भाई भाई होंगे वहां कीना का गुज़र नहीं।

हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़र्माया : ऐ लोगो आपस में एक दूसरे पर हसद न करो, एक दूसरे से कीना मत रखो और एक अल्लाह के बन्दे बनकर आपस में भाई–भाई बन जाओ, किसी भाई के लिए हलाल नहीं कि वह अपने भाई को तीन दिन से ज़ियादा छोड़ दे।

फ़रमाया दोशंबे और जुमेरात को अमल पेश होते हैं तो जिस ने मुआफ़ी मांगी होगी उस को मुआफ़ी दी जाती है और जिसने तौबा की होगी उस की तौबा कबूल होती है लेकिन कीना वालों के अमल उनके कीना के सबब लौटा दिये जाते हैं जब तक वह उससे बाज़ न आएं।

गुरूर :

पस ऐ इब्लीस! यहां तुझे गुरूर करना ज़ेब नहीं (अअराफ : १४)

किसी इन्सान में कोई कमाल हो और उस कमाल की वजह से वह दूसरों को हक़ीर ज़लील और अपने से कम समझने लगें तो इसी को किब्र और गुरूर कहा जाता है यह ऐब की चीज़ है।

रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के दिल में राई के दाने के बराबर भी गुरूर होगा वह जन्नत में दाख़िल न होगा।

फरमाया जो शख्स यह पसन्द करता है कि उसके सामने लोग खड़े रहें उसको अपना ठिकाना जहन्नम में बना लेना चाहिए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक बार दो ज़ानों बैठ कर खाना खा रहे थे एक बद्दू भी उस वक्त मौजूद था, उसने कहा बैठने का यह क्या तरीका है? फ़रमाया : खुदा ने मुझ को शरीफ बन्दा बनाया है, मग़रूर और घमन्डी नहीं बनाया।

एक बार फ़रमाया क्या मैं तुम को बताऊं कि दोज़ख़ी कौन है, हर अक्खड़, बुरी आदतों वाला घमण्डी। शैतान इसी गुरूर की वजह से जन्नत से निकाला गया, उसने हजरत आदम (अ०) के मुकाबले में अपने आप को बड़ा समझा, और कहा कि मैं इससे बेहतर हूं, वह मिट्टी से बना है और मैं आग से बना हूं खुदा को इस की यह शैखी अच्छी न मालूम हुई और हुक्म दिया।

यहां से उतर जा, यहां तुझे गुरूर करना जेबा नहीं, निकल जा बड़ाई के बदले तुझे यहां से रूस्वाई और छोटाई मिली। (अअ़राफ़ : १३)

दिखावा :

और उन (काफिरों) जैसे न बनो जो मारे शैख़ी के और लोगों को दिखाने के लिए घर से निकल पड़े। (अन्फ़ाल : ४७)

इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला को दिखावे और शैख़ी के काम पसन्द नहीं।

दिखावे का काम यह है कि जैसे कोई नमाज़ पढ़े लेकिन नमाज़ पढ़ने की गरज़ यह न हो कि फर्ज अदा हो, अल्लाह खुश हो, बल्कि यह हो कि दुन्या वाले नमाज़ी कहें, इसी तरह रोज़ा हज ज़कात, सख़ावत और दूसरे नेकी के काम इस लिए न किये जाएं कि वह अल्लाह तआला की तरफ से फर्ज़ हैं इन को अल्लाह वास्ते करना चाहिए बल्कि इन सब का मक़सद यह हो कि लोग रोजा दार, हाजी, सखी और नेक कहें। इस क़िस्म के जितने काम हैं अल्लाह के यहां उनकी कोई क़ीमत नहीं है।

एक हदीस में है कि अल्लाह तआला फरमाता है कि मैं शिर्क से बे नयाज हूं जो शख्स मेरे लिये कोई ऐसा काम करे जिस में किसी और को भी शरीक कर लिया गया है यह शिर्क

(शेष पृष्ठ ११ पर)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ० अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी

पाबन्दी और एअतिदाल इस्लाम की दो पसन्दीदा चीजें

४३६. ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की इबादत के बारे में पूछने के लिए तीन आदमी अज़वाजे मतहहरात के घर आए। अज़वाजे मतहहरात ने आप की इबादत के मामूलात बता दिये तो ऐसा लगा जैसे उन तीनों ने उसे कम समझा और कहने लगे, कहां हम लोग कहां हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) आप के तो अगले पिछले सब गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दिये गये हैं, उनमें से एक साहिब ने कहा : मैं तो हमेशा रात भर नमाज़ पढ़ा करूंगा, दूसरे साहिब बोले : मैं तो हमेशा रोज़ा रखूंगा और कभी भी रोजा न छोडूंगा। तीसरे ने कहा मैं औ़रतों से अलग रहूंगा कभी शादी न करूंगा। इतने में हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तशरीफ ले आए। आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम ही लोग यह सब बातें कर रहे थे। सुनो ! मैं तुम में सब से ज़ियादा अल्लाह तआ़ला से डरने वाला हूं। तुम में सब से ज़ियादा अल्लाह तआ़ला की रज़ा व ख़ुशी का पास व लिहाज रखता हूं लेकिन मैं कभी रोजा रखता हूं कभी नहीं रखता, नमाज भी पढ़ता हूं और सोता भी हूं और औ़रतों से शादी भी करता हूं जो हमारे तरीके से मुंह मोड़े वह हम में से नही।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

जिस्म को बेजा तक्लीफ देने की मनाही

४३७. ह़ज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तकरीर फ़रमा रहे थे कि उसी बीच एक शख्स पर नजर पड़ी जो खड़ा था। आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया यह कौन है? लोगों ने बताया कि यह अबू इस्राईल हैं, इन्होंने नज़्र मानी है कि यह धूप में खड़े रहेंगे न बैठेंगे न साये में रहेंगे और न किसी से बात करेंगे, हमेशा रोज़े से रहेंगे हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया इन से कहो बात करे, साये में रहें, बैठें और अपना रोजा पूरा कर लें। (बुखारी)

४३८. ह़ज़रत अनस बिन मालिक (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) घर में दाखिल हुए तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने देखा कि दो सुतूनों के बीच एक रस्सी बंधी हुई है आप ने दर्याफ़्त फरमाया कि यह कैसी रस्सी हैं , बताया गया कि हजरत जैनब की रस्सी है, जब (इबादत में) सुस्ती करती है तो इससे लटक जाती हैं। आप ने फ़रमाया इस को खोल दो, तुम लोगों को चाहिए कि निशात हो तो नमाज़ पढ़ो सुस्ती हो तो सो जाओ।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

जितना बस में हो उतना ही करना चाहिए।

४३९. ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) तशरीफ लाए उस वक्त उन के पास एक औरत मौजूद थी आपने दर्याफ्त फ़रमाया यह कौन है, ह़ज़रत आइशा ने फ़रमाया यह फुलां औरत है, जिन की नमाजों का चर्चा है। (यानी यह कि वह बहुत नमाजें पढ़ती हैं) आप (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया तुम लोग ऐसा मत करो तुम उतना करो जितना कर सकते हो। अल्लाह तआला (अज्र देते) नहीं उक्ताएगा तुम (इबादत करते) उक्ता जाओगे। अल्लाह तआला को वही इबादत पसन्द है जो बराबर की जाये। (बुख़ारी व मुस्लिम)

नींद की हालत में नमाज न पढ़ें

४४०. ह़ज़रत आ़इशा (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब तुम में से किसी को नमाज़ पढ़ने से नींद आने लगे तो वह सो जाए यहां तक कि नींद पूरी हो जाए (तब नमाज़) पढ़े अगर तुम में से किसी ने नींद की हालत में नमाज पढ़ी तो क्या मालूम इस्तिग़फ़ार करना शुरूअ करे और नींद के सबब जबान से बद दुआ निकल जाए। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हदीस की मशहूर किताबें यह हैं: बुखारी, मुस्लिम, नसई, सुनने अबी दाऊद, सुनने तिर्मिजी, सुनने इब्ने माजा, मुस्नदे इमाम अहमद मुवत्ता इमामे मालिक

हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में

मौ० अबुलहसन अली हसनी

मुसलमानों की इबादतें (उपासनायें) तथा मुख्य धार्मिक कर्तव्य (फरायज)

प्रत्येक समझदार तथा बालिग मुसलमान पर चार चीजें अनिवार्य (फर्ज) हैं,और इसी कारण इनको दीन के चार अरकान (अर्थात चार धर्म–स्तम्भ) कहते हैं।

१. पांच समय की नमाज पढ़ना

२. यदि किसी मुसलमान के पास माल की एक निर्धारित राशि हो और उस पर एक वर्ष बीत गया हो, तो वह उसमें से चालीसवां भाग निर्धनों पर व्यय करे, इसे जकात कहते हैं, और यह फर्ज है।

३. रमजान के पूरे मास के रोजे रखना।

४. जीवन में एक बार (कुछ विशिष्ठ परिस्थितियों को पूरा करते हुए) खुदा के घर (काबा शरीफ) का हज करना।

उपर्लिखित वे फराइज (अनिवार्य क्रियाएं) हैं जिनका इनकार करने वाला इस्लाम के क्षेत्र से बहिष्कृत हो जाता है तथा उपर्युक्त बातों को नितान्त छोड़ देने वाला भी मुसलमानों की संस्था से वहिष्कृत है। इन चार धर्म स्तम्भों में जकात एवं हज के लिए कुछ शर्तें हैं, और यह भी सम्भव है कि एक मुसलमान पर उसके पूर्ण जीवन में जकात तथा हज फर्ज (अनिवार्य) न हो। परन्तु नमाज एवं रोजे से किसी समझदार तथा बालिग को छुटकारा नहीं। रोजे में भी इतनी गुन्जाइश है कि यदि कोई व्यक्ति रमजान में ऐसा बीमार है कि रोजा रखना उसके लिए हानिकारक और खतरनाक है अथवा यात्रा कर रहा है, तो उस दशा में छूटे हुए रोजों की कजा दूसरे समय हो सकती है, लेकिन नमाज में इतनी भी गुंजाइश नहीं। वह स्वस्थ एवं रोग, देश तथा प्रदेश हर परिस्थिति एवं दशा में अनिवार्य है। हां, यदि खड़े होकर न पढ़ सकें तो बैठ कर, और बैठ कर भी न पढ़ सकें तो लेट कर और अगर यह भी कठिन हो तो संकेत द्वारा पढ़ सकता है, लेकिन नमाज की छूट किसी दशा में भी नहीं और न क्षमा की जायगी, यहां तक कि युद्ध की दशा में भी (एक विशेष रूप से) नमाज अदा करने का आदेश है। यात्रा की व्यवस्था में इतनी छूट है कि चार रकअत वाली नमाज़ (जुह्र, अस्र, इशा) दो रकअत अदा करे इसमें सुन्नतें तथा नफल नमाजें स्वेच्छ हो जाती हैं और उनका आवश्यक होना समाप्त हो जाता है।

पांच समय की नमाज़ चार अनिवार्य कर्तव्यों में सर्वप्रथम और प्रत्येक परिस्थिति में अनवार्य है।

नमाज व्यवहारिक अनिवार्य एवं कर्तव्यों (फर्जों) में सबसे महतवपूर्ण और सबसे बड़ा सार्वजनिक और सामूहिक कर्तव्य (फरीजा) है और वह इस्लाम का धार्मिक कृत्य तथा मुसलमान की पहचान बन गई है। यहां तक कि उसको इस्लाम तथा गैर इस्लाम के बीच सीमा रेखा का रूप निर्धारित किया गया है।

पांचों नमाजों के निर्धारित समय

ऊपर वर्णन किया जा चुका है कि प्रत्येक समझदार तथा बालिग मुसलमान पर पांच वक्त की नमाजें फर्ज (अनिवार्य) हैं। यह पांच नमाजें फज्र, जुह्र, अस्र, मगरिब तथा इशा की नमाजें हैं। फज्र की नमाज का समय प्रातः से कुछ समय पूर्व सुबह सादिक उदय होने पर आरम्भ होता है और सूर्य उदय से पहले तक रहता है, इस बीच यह नमाज़ अदा होनी चाहिए। यह नमाज़ दो रकअ़त की होती हैं, परन्तु चूंकि मनुष्य उस समय ताज़ा दम होता है और सुहाना समय, अतः इसमें किराअ़त और नमाज़ों की अपेक्षा लम्बी होती है। रात के पिछले पहर सन्नाटे में जब शून्य की दशा होती है और दुनिया मीठी नींद सोती है, फज्र की नमाज़ की अज़ान होती है। अजान के परम्परागत शब्दों के साथ (जिनका उल्लेख आगे किया जाएगा) मुअज्जिन इन शब्दों की (केवल फज्र की अज़ान में) अभिवृद्धि करता है, अस्सलातु खैरूम मिनन्नौम–अस्सलातु ख़ैरूम मिनन्नौम'' (नमाज़ सोने से उत्तम है–नमाज़ सोने से उत्तम है) और मुसलमान पुरूष तथा महिलाएं यहां तक कि घर के बच्चे सामान्य दशा में इस पर जागरूक हो जाते हैं और नमाज की तैयारी शुरू कर दते हैं। फर्ज की दो रकअ़तों से पूर्व, जो जमाअ़त (सामूहिक रूप) से पढ़नी चाहिए, सुन्नत की दो रकअ़तें

अपने अपने तौर पर पृथक पढ़ी जाती हैं, और यह समस्त सुन्नत नमाजों में अधिक महत्वपूर्ण हैं। फज्र की फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सूर्य उदय होने तक कोई नमाज़ नहीं है।

जुह्र का समय ठीक मध्यान्ह के बाद अर्थात सूर्य ढलने के बाद से आरम्भ होता है और उस समय तक रहता है जब तक कि हर चीज़ की छाया उसकी दुगनी हो जाए।

अस्र का समय जुह्र की समाप्ति से सूर्यास्त तक रहता है, परन्तु अस्र की नमाज इतनी देर करके पढ़ना कि सूर्य पीला पड़ जाए, अनुचित है।

मगरिब का समय सूर्यास्त होने के बाद शफक डूबने तक।

इशा का समय मगरिब (जो सूर्यास्त के बाद से लगभग डेढ़ घंटे तक रहता है) के बाद से आरम्भ होता है और सुबह सादिक तक रहता है, परन्तु अर्ध रात्रि तक इशा की नमाज पढ़ लेना चाहिए।

इन पांचों समय की नमाजों में सत्तरह रकअतें फर्ज हैं। फज्र के समय दो रकअत, जुह्र के समय चार रकअत, अस्र के समय चार,मगरिब के समय तीन, इशा के समय चार। इन फर्ज रकअतों के अतिरिक्त विभिन्न समयों में तीन वाजिब और बारह सुन्नतें हैं। सुन्नतों में फज्र के समय दो सुन्नत, जुह्र में फर्ज से पहले चार सुन्नतें और फर्ज के बाद दो सुन्नतें हैं, मगरिब के समय फर्ज के बाद दो सुन्नत और इशा के समय फर्ज के बाद दो सुन्नत तत्पश्चात तीन रकअतें वाजिब हैं जिनको वित्र कहते हैं।

यह समस्त सुन्नतें मुअक्किदा हैं। सुन्नत मुअक्किदा वह नमाज़ें हैं, जिनका निरन्तर पढ़ना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व आलिही व सल्लम से प्रमाणित है वाजिब वह है जिसकी फ़र्ज़ के बराबर ताकीद आई है, किन्तु फ़र्ज़ से इसका दर्जा कुछ कम है।

नमाज़ कैसे पढ़ी जाये

अब आइये कुछ निकट होकर मुसलमानों को नमाज पढ़ता हुआ देखें और मालूम करें कि वह नमाज किस प्रकार अदा करते हैं, किस प्रकार खड़े होते हैं और झुकते हैं और किस प्रकार उसको आरम्भ तथा अन्त करते हैं। कौन सा भारतीय नगरवासी अथवा देहाती है, जिस के कान में अजान के शब्द न पड़े होंगे और जिसकी बस्ती अथवा नगर में मस्जिद न होगी। मस्जिदों के पास से गुजरते, मुसलमानों के घर आते जाते और यात्रा करते हुए भी लोगों मुसलमानों को नमाज पढ़ते बहुधा देखा है, परन्तु शायद कुछ लोगों को जीवन भरइसका अवसर न मिला होगा कि वह नमाज को ध्यानपूर्वक देखें, या किसी मुसलमान भाई से पूछें कि उनके यहां नमाज किस प्रकार पढ़ी जाती है। अतः इसके बारे में या तो हमें कुछ ज्ञात नहीं या हमारा ज्ञान सरकारी अथवा अपूर्ण है।

अज़ान

सर्वप्रथम अजान को ही लीजिए जो दिन में पांच बार उच्च स्वर में कही जाती है और जिसकी गुंजार से कोई गांव, कोई नगर और मिली जुली आबादी का कोई मोहल्ला मुश्किल से अनभिज्ञ होगा।

पहले अजान के शब्द सुनिये फिर उनका अर्थ पढ़िये

शब्द अर्थ सहित

अल्लाहु अकबर–अल्लाहु अकबर अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सब से बड़ा है

अल्लाहु अकबर–अल्लाहु अकबर अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सब से बड़ा है

अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं है।

अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं है।

अशहुद अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के पैगम्बर हैं।

अशहुद अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद अल्लाह के पैगम्बर हैं।

हय्य अ़लस्सलाह
आओ नमाज को

हय्य अ़लस्सलाह
आओ नमाज़ को

हय्या अलल फलाह
आओ कामयाबी (कल्याण) को

हय्य अलल फलाह
आओ कामयाबी (कल्याण) को

अल्लाहु अकबर–अल्लाहु अकबर अल्लाह सबसे बड़ा है अल्लाह सब से बड़ा है

ला इलाह इल्लल्लाहु
अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं।

नमाज़ से पूर्व वुज़ू किया जाता है

नमाज़ से पहले मुसलमान को वुज़ू करना होता है। वुज़ू पवित्रता की उस विशिष्ट विधि को कहते हैं जिसके

बिना नमाज़ नहीं होती। वुजू में सर्वप्रथम पहुंचों तक तीन बार हाथ धोए जाते हैं, फिर तीन बार कुल्ली की जाती है, फिर तीन बार पानी से नाक साफ की जाती है, फिर तीन बार मुंह को माथे के बालों से ठुड्डी तक तथा एक कान की लौ से दूसरे कान की लौ तक धोते हैं, फिर दाहिना हाथ कुहनियों समेत तीन बार धो कर, बायां हाथ कुहनियों समेत तीन बार धोते हैं, फिर एक बार सारे सिर का मसह करते हैं अर्थात् हाथ भिगोकर सिर के बालों पर एक बार फेरते हैं, फिर दाहिना पैर गट्टों समेत तीन बार धोते हैं, फिर बायां पैर इसी प्रकार धोते हैं। मल, मूत्र तथा वायु के निकलने आदि से यह वुजू पुनः आवश्यक हो जाता है और इसके बिना नमाज नहीं होती। सो जाने से भी वुजू की आवश्यकता पड़ जाती है। एक वुजू से (यदि यह टूट न जाय) कई कई समय की नमाज पढ़ी जा सकती है। वुजू करने का प्रबन्ध सामान्यतः मस्जिदों में होता है, इसके लिए हौज या नल की टोटियां होती हैं। शुद्ध लोटों तथा बधनियों का भी प्रबन्ध होता है। बहुत से दीनदार मुसलमान अपने घरों से वुजू करके जाते हैं ताकि उनको अधिक सवाब मिले। बड़ी मस्जिदों में शीत काल में गरम पानी का भी प्रबन्ध होता है।

मस्जिद में मुसलमान का नित्य कार्य एवं विधि

मस्जिद जाकर यदि वुजू है तो उसी वक्त नहीं तो वुजू करके आदमी सुन्नत या नफ्ल में व्यस्त हो जाता है, यदि वह इससे निवृत्त हो चुका है तो शान्ति पूर्वक नमाज की प्रतीक्षा में बैठ जाता है, या कुरआन मजीद की तिलावत (पाठ) या जप में लग जाता है। जमाअत (सामूहिक नमाज) का समय आता है तो पहले इकामत कही जाती है, जो जमाअत के आरम्भ होने का एलान है। इसमें सब वही शब्द होते हैं जो अजान में कहे जाते हैं, केवल 'हय्या अलल फलाह'' के बाद दो वाक्य अधिक होते हैं।

क़द क़ामतिस्लाह
नमाज खड़ी होने जा रही है,
कद कामतिस्लाह
नमाज खड़ी होने जा रही है।

सफ बन्दी (पंक्ति बद्ध) तथा इमाम व मुकतदी की जमाअत

जो लोग मस्जिद में बिखरे हुए बैठे होते हैं या किसी शुभ कार्य में लगे होते हैं, सब पंक्ति में आकर खड़े हो जाते हैं। इकामत की समाप्ति पर इमाम जो मुहल्ले का कोई धार्मिक विद्वान या हाफिजे कुरआन या कोई पढ़ा लिखा मुसलमान होता है, तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहता हुआ कानों की लौ तक हाथ उठाकर नाभि पर हाथ बांध लेता है और नमाज आरम्भ कर देता है। इस प्रकार वह और मुकतदी दास के समान हाथ बांधे हुए अपने मालिक के सामने खड़े हो जाते हैं। इमाम मुक्तदियों (पीछे पंक्ति में खड़े नमाजियों) के आगे बीच में खड़ा होता है। कुछ क्षण इमाम तथा मुक्तदी मौन रह कर एक दुआ पढ़ते हैं, जिसका अर्थ अग्रलिखित है।

ऐ अल्लाह तू गुणों वाला है और तेरा नाम शुभ है और तू श्रेष्ठ महिमा वाला है, और तेरे अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं है।

इमाम का नमाज़ पढ़ाने की ओर मुक्तदियों के पढ़ने की विधि

फिर यह नमाज जेहरी होती है तो वह (अर्थात इमाम) उच्च स्वर में किराअत आरम्भ कर देता है। इस दुआ को पढ़ने के बाद वह सूरे–ए–फातिहा पढ़ता है। यह प्रत्येक नमाज की हर रकअत में पढ़ी जाने वाली सूरे है तथा कुरआन मजीद की भूमिका और इस्लाम का सारांश है। यह कुरआन मजीद का सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला भाग है और इस्लाम में इसका बहुत उच्च स्थान है। अतः इसका यहां अनुवाद लिखा जाता है।

आरम्भ खुदा के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है। सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो समस्त संसार का पालन हार है।

अत्यन्त कृपाशील और दयावान है।

उस दिन का मालिक है जिस दिन बदला दिया जायगा।

ऐ अल्लाह! हम तेरी ही बन्दगी करते हैं, और तुझी से सहायता चाहते हैं।

हमें सीधा मार्ग दिखा, उन लोगों का मार्ग जिन पर तूने कृपा की,

न कि उनका (मार्ग) जिन पर तेरा प्रकोप हुआ न उनका जो भटक गए।

इस पूरी सूरे के समाप्त होने पर इमाम और मुक्तदी ''आमीन'' कहते हैं, जिसका अर्थ है – ऐ अल्लाह ! हमारी दुआ कुबूल कर। फिर इमाम कुर्आन मजीद की कोई सूरे अथवा कुर्आन मजीद की कुछ आयतें पढ़ता है। यहां पर दो लघु सूरतों का अर्थ लिखा जाता है –

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील और दयावान है–

काल साक्षी है। मनुष्य तो घाटे ही में है, किन्तु वह लोग जो 'ईमान' लाये और ईमान के अनुकूल कर्म करते रहे और एक दूसरे को हक (बात) की ताकीद करते रहे और सब्र (धैर्य) की ताकीद करते रहे। (सूर–ए–अस्र)

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त कृपाशील है और दयावान है।

कहो ! कि वह (जात पाक जिसका नाम) अल्लाह (है), एक है। अल्लाह बे नियाज (निःसपृह) है।

न किसी का बाप है और न किसी का बेटा, और कोई नहीं जो उसके बराबर का हो। (सूर–ए–इख्लास)

उसके बाद इमाम तकबीर (अल्लाहु अकबर) कहता है, और सब घुटनों को पकड़ कर झुक जाते हैं, इसको रूकू कहते हैं, इस अवस्था में रहते हुए तीन बार या इससे अधिक "सुबहान रब्बियल अ़ज़ीम" (पवित्र है मेरा महिमावान पालन हार) कहा जाता है। फिर इमाम कहता है "समिअ़ल्लाहु लिमन ह़मिदा" (अल्लाह ने उसको सुना जिसने उसका गुण गान किया) और लोग थोड़ी देर के एि सीधे खड़े हो जाते हैं, और मुकतदी "रब्बना लकल हम्द" (ऐ हमारे पालनहार ! समस्त स्तुति तेरे लिए है) कहते हैं। फिर इमाम "अल्लाहु अकबर" कहते हुए सजदे में जाता है, और मुकतदी भी उसका अनुसरण करते हैं। सजदे की अवस्था में ललाट तथानाक भूमि पर होती है, दोनों हथेलियां खुलीं तथा उंग्लियां मिली हुई भूमि पर टिकी होती हैं कुहनियां भूमि से उठी हुई तथा बगलों से अलग होती हैं, घुटने भूमि पर टिके होते हैं। पैर के दोनों पंजे भूमि से लगे होते हैं। सजदे की अवस्था में तीन बार या इससे अधिक "सुबहान रब्बियल अअ़ला" (मेरा रब सब से बलन्द है) कहा जाता है, इसके बाद अल्लाहु अकबर कहते हुए विशिष्ट आसन से सीधे बैठ जाते हैं फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए इसी तरह दूसरा सजदा करते हैं, फिर अल्लाहु अकबर कहते हुए दूसरी रकअ़त के लिये खड़े हो जाते हैं। इसकी वही विधि है जो पहली रकअत में गुजरी। इसी पर हर रकअत को अनुमान करना चाहिए। हर दो रकअत के बाद बैठना आवश्यक है, जिसको कअदा कहते हैं। जिस कअदा के बाद (तीसरी रकअत के लिए) खड़ा होना हो उसके केवल अग्रलिखित यह वाक्य कहे जाते हैं जो अर्थ सहित प्रस्तुत हैं–

अत्तहीय्यातु लिल्लाहि वस्सलवातु वत्तय्यिबात, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुह । अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालिहीन अशहदुअल–ला–इलाह इल्लल्लाहु–व अशहंदु–अन्न–मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू।

सब कौली व फिअ़ली इबादतें और पाक चीजें खुदा ही के लिए हैं। ऐ अल्लाह के नबी तुम पर खुदा की सलामती और रहमत हो और उसकी बरकत नाजिल हो और सलाम हम पर और अल्लाह के नेक बन्दों पर हो। मैं गवाही देता हूं कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद (उपास्य) नहीं और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहिवसल्लम) उसके बन्दे और रसूल हैं।

और जिस क़अ़दा के बाद सलाम फेरना होता है तो उसमें उपर्युक्त वाक्यों के बाद निम्नांकित दुआ भी पढ़ी जाती है।

अल्लाहुम्म–सल्लि–अ़ला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम–मजीद अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इब्राहीम व अला आलि इब्राहीम इन्नक हमीदुम मजीद । रब्बना आतिना फिद्दुनिया हस–नतौं व फिल आखिरति हसनतौं व किना अजाबन्नार अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ बिक मिन अजाबि जहन्नम व अऊबिक मिन अजाबिल कब्र व अउजु बिक मिन फितनतिल महया वल ममात व अऊजु बिक मिन शर्रि फितनतिल मसीहिद्दज्जाल।

ऐ अल्लाह (हजरत) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तथाउनके परिवार पर कृपा (रहमत) अवतीर्ण कर जैसा कि तूने (हजरत) इब्राहीम तथा उनके परिवार पर अवतीर्ण की निःसन्देह तू समस्त गुणों वाला है। ऐ अल्लाह तू बरकत (सम्पन्नता) अवतीर्ण कर (हजरत) मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर तथा उनके परिवार पर, जैसी बरकत अवतीर्ण की ह़ज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम) पर और उनके परिवार पर । निश्चय तू समस्त गुण वाला है। ऐ अल्लाह ! हम को प्रदान कर दुन्या तथा आखिरत (परलोक) में भलाई और जहन्नम के अजाब से बचा।

ऐ अल्लाह बचा मुझको जहन्नम के अजाब तथा कब्र के अजाब से। ऐ अल्लाह तेरी शरण लेता हूं जीवन तथा मृत्यु की आजमाइश (परीक्षा) और मसीह दज्जाल की दुष्टता तथा आपद से।

इसके बाद सलाम फिर जाता है, इमाम कहता है "अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाह" (तुम पर सलामती हो और अल्लाह की रहमत हो) और नमाज़ की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है। यह नमाज़ के प्रति अति संक्षिप्त परिचय है, जिसका उद्देश्य यह है कि ग़ैर मुस्लिम भाइयों के सम्मुख नमाज़ का ढांचा और ख़ाका आ जाए और उनको इसके सत एवं सार का अनुमान हो जाए। इससे कोई नमाज़ पढ़ना नहीं सीख सकता और न यह इसका उद्देश्य है। यह बात तो व्यवहारिक शिक्षा और बार-बार के निरीक्षण एवं प्रशिक्षण के बिना नहीं आ सकती।

(पृष्ठ ४ का शेष)

तो मैं उससे कहता हूं कि मेरे साथ अल्हम्दु क़ुल्हवल्लाहु, दुरूद शरीफ पढ़ो वह पढ़ता है फिर हाथ उठा कर दुआ करता हूं कि ऐ अल्लाह जो हम दोनों ने पढ़ा है उसे क़ुबूल फरमा कर अपने फ़ज़्ल से इस का सवाब और इस मिठाई में से जो ग़रीब पाए उसका सवाब शैख़ की रूह को बख़्श दीजिए और इस फातिहा दिलाने वाले को और मुझे भी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत अपनाने की तौफ़ीक अता फ़रमाइये और बिदआत को समझने और उनसे बचने की तौफ़ीक़ दीजिए। आमीन!

एक फ़ातिहा दिलाने वाले ने कहा : मैंने सुना था कि आप बड़े पीर साहिब को मानते ही नहीं हैं। मैंने कहा मैं उनको अल्लाह तआला का मुकर्रब तरीन बन्दा मानता हूं और उनको रोज़ाना फ़ातिहा के सवाब भेजने का सवाब लेता हूं।

(पृष्ठ ५ का शेष)

है। एक सहाबी रिवायत करते हैं कि क़ियामत के दिन जब ख़ुदा अगलों और पिछलों को जमा करेगा तो एक पुकारने वाला पुकारे गा कि जिसने अपने उस काम में जो ख़ुदा के लिए किया गया है किसी और को शरीक कर लिया है वह उसका सवाब उसी से मांगे क्योंकि अल्लाह शिर्क से बे नियाज़ है।

0522-256005
Asif Bhai Saree Wale
M.A. Saree Bhandar
Manufacturer & Supplier of :
Chickan Sarees & Suit Pieces
In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

0522-264646
Bombay Jewellers
The Complete Gold & Silver Shop
84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी(रह़०)

सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह़०) की पैदाइश स० ४७० या ४७१ हि० में ईरान के एक शहर गीलान में हुई उसी को जीलान भी कहा जाता है। इसीलिए आप को गीलानी या जीलानी कहते हैं। आपके वालिद अबू स्वालेह़ बिन अ़ब्दुल्लाह थे आप ह़सनी सादात से थे। १८ साल की उ़म्र में ४८८हि० में अ़ला ता़लीम के लिए बग़दाद का सफ़र किया। रास्ते में डकुओं की डकैती फिर उनकी तौबा का क़िस्सा मशहूर है। बग़दाद पहुंच कर मशहूर असातिज़ा से तफ़्सीर, ह़दीस फ़िक़्ह और अदब का इ़ल्म ह़ासिल कर के हर फ़न में महारत पैदा की। शैख़ ह़म्माद दब्बास की सुह़बत में रहे, क़ाज़ी सईद मख़रमी से ख़िलाफ़त व इजाज़त मिली। बड़े ही साहिबे कश्फ़ व करामात बुज़ुर्ग थे। करामत की शुहरत में शायद ही कोई बुज़ुर्ग उन के बराबर हो मस्लक के लिहाज़ से ह़ंबली थे लेकिन ह़नफ़ी मालिकी, शाफ़ओ़ी सब में यकसां मक़्बूल थे। बड़ा रूजूअ़ था। उनकी मजलिस में बड़े-बड़े उ़लमा ह़ाज़िर होते। बादशाह और वज़ीर लोग ह़ाज़िर होते। वअ़ज़ों में दुन्या से बेरग़बती और अल्लाह की मह़ब्बत और ख़ौफ़ का ज़िक्र इस तरह से फ़रमाते कि लोगों की चीख़ें निकल जातीं। आप कभी किसी बादशाह या वज़ीर के दरवाज़े पर तशरीफ़ नहीं ले गये। तुवक्कुल के अ़लातरीन मक़ाम पर थे। आप के अख़लाक़ और आप की बातों से मुतअस्सिर होकर हज़ारों यहूदयों और ईसाइयों ने इस्लाम क़बूल किया और लाखों लोगों ने बुरे कामों से तौबा की। आख़िर वक़्त में अपने बेटे को जो वसीयत की उसमें बड़ी ताकीद से फ़रमाया : जो कुछ मांगना हो सिर्फ़ अल्लाह से मांगना। उनकी इस वसीयत से कम ही लोग वाक़िफ़ हैं। ८ या ६ रबीउ़ल आख़िर को आप की वफात हो गई। आपकी लिखी हुई दो मशहूर किताबें हैं : गुन्यतुत्तालिबीन और फ़ुतूहुल ग़ैब। अल्लाह तआला हम को उनकी मह़ब्बत अ़ता फ़रमाए और उनकी पैरवी की तौफ़ीक़ दे।

सुन्नत हदीस और बिदअत

मौ० मुजीबुल्लाह नदवी

जो शरीअ़त नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) लाए हैं उस पर यक़ीन रखने का नाम ईमान है। अब यह भी समझ लेना ज़रूरी है कि इस्लामी शरीअ़त का इ़ल्म हम को दो ज़रीओं से हासिल हुआ है, एक ज़रीआ़ क़ुर्आने पाक है और दूसरा ज़रीआ़ नबी–ए–पाक (सल्लल्लाह अ़लैहि वसल्लम) की ह़दीस और सुन्नत है सुन्नत के मअ़ना (अर्थ) रास्ता और तरीक़े के हैं और ह़दीस के मअ़ना बात चीत के हैं लेकिन इस्लाम में जब सुन्नत का लफ़्ज़ बोला जाता है तो उससे मुराद वह रास्ता और तरीक़ा होता है जिस पर हमारे प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) और ख़ुलफ़ाए राशिदीन चले हैं या उस पर चलने का ह़ुक्म दिया है और ह़दीस से मुराद वह बातें हैं जिन को आप ने क़ुर्आन समझाने के लिए हमें बताईं हैं। जैसे क़ुर्आने पाक में नमाज़ का ह़ुक्म है मगर उस का वक़्त किस वक़्त से किस वक़्त तक है और किस वक़्त कितनी रकअ़तें पढ़नी चाहिएं, रूकूअ़ कैसे करना चाहिए और सजदा कैसे करना चाहिए और उसमें क्या पढ़ना चाहिए यह सब क़ुर्आने पाक में नहीं बयान हुआ है। यह सब तो हमारे प्यारे नबी (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ने बताई हैं। इसी तरह क़ुर्आने पाक के बहुत से अह़काम की तफ़सीलात आप ने बताई हैं और यह मर्तबा आप को अल्लाह तआ़ला ही ने अ़ता फ़रमाया है कुर्आने पाक में है : अनुवाद – "और हमने आप पर ज़िक्र (क़ुर्आन) उतारा कि आप लोगों के लिए बयान कर दें।" (नह़ल : ४४)

अब अगर कोई क़ुर्आने पाक को तो मानता है मगर आप की सुन्नतों और ह़दीसों को नहीं मानता तो वह मुसलमान नहीं है, इस लिए कि ह़दीसें तो क़ुर्आने पाक ही का बयान हैं तो ह़दीसों को न मानना गोया कि क़ुर्आन की इस हिदायत का इन्कार है। फिर यह भी सोचने की बात है कि क़ुर्आने पाक तो हम को आप ही के ज़रीअ़े से मिला है और आप के बयान ही से सह़ाबा ने इसे अल्लाह का कलाम माना लिहाज़ा अगर कोई सुन्नत व ह़दीस को नहीं मानता तो ह़क़ीक़त में वह क़ुर्आन के कलामे इलाही होने का इन्कार करता है। जोलोग ह़दीस को छोड़ कर अपने को अहले क़ुर्आन कहते हैं और ह़दीस का इन्कार करते हैं इसका मतलब यह हुआ कि वह नुबूवत का और वह्य का भी इन्कार करते हैं, उनसे कोई पूछे कि इस क़ुर्आन का कलामे इलाही होना तुम को कैसे मालूम हुआ और क़ुर्आने पाक किस पर नाज़िल हुआ तो मजबूरन उनको यही कहना पड़ेगा कि यह सब हुज़ूरे अकरम मुह़म्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के ज़रीअ़े हम को मिला और उन्हीं के बताने से हम को इस के कलामे इलाही होने का इ़ल्म हुआ तो कितनी हिमाक़त की बात होगी कि जिस के ज़रीअ़े से हम को यह क़ुर्आन मजीद मिला और जिस के बताने ही से हमने जाना कि यह कलामे इलाही है और जब वह इस क़ुर्आन के अह़काम की तफ़्सील बयान करे तो हम इस का इन्कार कर दें। अलअ़याज़ बिल्लाह

एक ह़दीस में है कि ऐसे आदमी को अपनी उम्मत में नहीं पाना चाहता कि जब मैं कोई हुक्म दूं तो वह कहे कि क़ुर्आन में मुझे यह हुक्म नहीं मिलता।(अबू दाऊद व तिर्मिज़ी)

उ़लमा ने आप की सुन्नतों और ह़दीसों को किताबों में जमा कर दिया है। उनमें से आठ किताबें मशहूर हैं : बुख़ारी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ़, तिर्मिजी शरीफ़, अबू दाऊद शरीफ़, नसई शरीफ़, मुअत्ता इमाम मालिक, मुस्नद इमाम अह़मद बिन ह़ंबल, इब्नि माजा। और भी ह़दीस की किताबें हैं जैसे शरह़ मअ़ानी अल आसार तह़ावी, सुनने बैहकी वग़ैरह ।

बिदअ़त : जिन बातों का ज़िक्र क़ुर्आन व ह़दीस में नहीं है और न सह़ाबा और ताबिअ़ीन के जमाने में पाई जाती थीं बा़द के लोगों ने उन को दीन समझ कर उन पर अ़मल करना शुरूअ़ कर दिया उसको बिदअ़त कहते हैं जैसे तअ़ज़िया दारी, मातम, क़ब्रों पर चढ़ावा, रौशनी, क़ब्रों पर मेला, मीलाद में लाज़िमी तौर पर खड़े होकर सलाम पढ़ना, दफ़न के बाद क़ब्र पर अज़ान वग़ैरह यह सब बिदअ़त हैं इनसे बचना चाहिए।

जिसने मेरी सुन्नत से मुंह फेरा वह मेरा नहीं है।

काज़ी हम्मास बिन मर्वान की कर्तव्य परायणता और निष्कामता

डा० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

दक्षिणी अफ्रीका के प्राचीन ऐतिहासिक शहर क़ीरवान के शासक ज़ियादतुल्लाह बिन अग़लब को काज़ी मुहम्मद बिन असवद सदीनी के अत्याचार व अन्याय की शिकायत पहुंचती है तो वह चिन्तित हो जाते हैं और अल्लाह से गिड़गिड़ाकर दुआ करते हैं कि क़ीरवान के इस उच्च पद के लिए एक ऐसे विद्वान की ओर मार्ग दर्शन करा दे जिसके द्वारा मुसलमानों को न्याय मिल सके। उन्होंने बहुत सोच विचार के बाद घोषणा की कि क़ीरवान के न्यायालय के लिए मुत्तक़ी और परहेजगार विद्वान अबुल क़ासिम हम्मास बिन मर्वान हमदानी को काजी मुहम्मदअसवद का उत्तराधिकारी नियुक्त किया जाता है।

लोगों को जैसे ही यह सूचना मिली, खुशी से झूम उठे और इस खुशी में उन्होंने जानवर ज़िब्ह किए। दावतें की और गरीबों, मिसकीनों को खाना खिलाया। इत्मीनान का सांस लिया कि दमन व अत्याचार का दौर समाप्त हुआ और न्याय का ज़माना आ पहुंचा। लोग इधर खुशी के तराने गा रहे थे और उधर उस नेक और ईश्वरवादी क़ाज़ी हम्मास की आवाज़ घर में गूंज रही थी। सुनने वालों ने सुना वह अपनी सेविका से कह रहे थे, खुदा की बन्दी क्या आज रात में खाने के लिए घर में कुछ नहीं है? सेविका ने जवाब दिया कि घर में कुछ भी नहीं है। थोड़ा सा जौ का आटा था मगर वह भी ख़त्म हो चुका है।

क़ाज़ी साहब अपने बेटे को आवाज देकर कहते हैं कि बेटे घर के कोने में जो कुल्हाड़ी रखी है उसे लो और बेचकर खाने के लिए आटा और तेल ले आओ। खाना खाकर पूरा घर इशा की नमाज पढ़ता है और फिर नफ़िलों और क़ुरआन की तिलावत आदि में व्यस्त हो जाता है, यहां तक कि नेक स्वभाव सेविका ज़ोहरा भी घर के एक कोने में खड़े होकर अल्लाह की इबादत करने लगती है। क़ाज़ी हम्मास नफिलें पढ़कर घर के अन्य लोगों को देखने के लिए अन्दर दाख़िल होते हैं तो देखते है कि उनके बेटे सालिम तहज्जुद पढ़ रहे हैं और उनके दूसरे बेटे मुहम्मद क़ुरआन की तिलावत कर रहे हैं। बूढ़ी पत्नी तसबीह व वजीफा में लगी हुईं हैं और सेविका ज़ोहरा आसमान की ओर हाथ उठाए हुए बड़े दर्द भरे अन्दाज में अल्लाह से दुआ कर रही है। यह दृश्य देख कर अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए और घर वालों से कहते हैं 'ऐ हम्मास के परिवार वालो इसी रास्ते पर चलते रहो।

काजी हम्मास ने चीफ जस्टिस का पद संभाला तो इतना समय भी न मिल सका कि अपने और घर वालों की आजीविका के लिए कोई काम धंधा तलाश करते। उन्होंने यह प्रतिज्ञा कर ली थी कि कोई वेतन या बैतुलमाल से कुछ रक़म नहीं लेंगे।

अमीर जियादतुल्लाह ने बहुत आग्रह करके कुछ मासिक रकम निर्धारित करना चाही, मगर उन्होंने बड़ी सफाई के साथ मना कर दिया। रात के समय किताबें नकल करते और उनको बाज़ार में बेच कर घर का खर्च चलाते, लेकिन न्यायिक कार्यों में व्यस्ता के कारण समय बहुत कम मिलता, इसलिए दिन प्रति दिन आय में कमी होती गयी। मजबूरी में सेविका ज़ोहरा को जवाब दे दिया कि वह दूसरी जगह काम तलाश कर ले और उनके साथ तंगी व परेशानी के जीवन से छुटकारा हासिल कर ले। नेक स्वभाव सेविका अपने आक़ा के घर से जाते हुए बहुत रोयी और एक दूसरे घर में नौकरी कर ली।

जब रात हुई तो उस घर के लोग खाना खाकर जल्दी ही सो गए और उनके खर्राटों की आवाज़ सुनायी देने लगी। कोई भी अल्लाह की इबादत और उसकी याद करता न दिखाई दिया, तो ज़ोहरा परेशान हो गई और क़ाज़ी हम्मास के घर लौट आयी। काजी साहब ने आने का कारण पूछा तो उसने कहा कि आपने तो मुझे काफिरों के हवाले कर दिया। हैरत से कहा कि वे लोग तो मुसलमान हैं, उसने बड़ी सादगी से बताया कि वे लोग रात में अल्लाह की इबादत नहीं करते न उसकी तारीफ़ व तसबीह करते हैं और न क़ुरआन पाक की तिलावत ही करते हैं। ज़ोहरा ने सोच लिया था कि जो लोग रात में अल्लाह को याद नहीं करते वे काफ़िर

होते हैं।

क़ाज़ी हम्मास ने अपने पद से सम्बन्धित बहुत सी ज़िम्मेदारियां अपने सहायकों मूसा बिन कितान, अल्लामा अब्दुर्रहमान वर्का और अबुल अब्बास इसहाक़ इब्न इब्राहीम यज़दी को सौंप दी थी और स्वयं दिन में मुकदमों के फैसले करते। इस के अलावा यह एलान कर दिया था कि जिसको जब जिस समय अपनी समस्या के हल और मुकदमे की पैरवी की जरूरत हो बिना किसी रोक टोक व हिचक आ सकता था। वे रात में जागते रहते और उनके साथ उनके बेटे सालिम जागते रहते और दरवाजा खट खटाते ही आवाज सुनकर आने वाले को काजी साहब के पास पहुंचा देते।

प्रधानमंत्री इब्ने साबिग ने उनके लिए कुछ रकम, सवारी, सेवक और एक सचिव नियुक्त करने की पेशकश की तो इनकार कर दिया। प्रधानमंत्री ने आग्रह किया तो धमकी दी कि वे त्याग पत्र दे देंगे। एक बार फिर प्रधानमंत्री ने कहा कि समय की कमी के कारण किताबें नकल करने में परेशानी होती है, इसे रोक कर बैतुलमाल से वेतन लेना स्वीकार कर लें तो इसको भी पसन्द न किया और कहा मैं मुसलमानों का सेवक हूं और उनकी सेवा का कोई आर्थिक बदला लेना मुझे पसन्द नहीं है।

एक बार उनकी सेवा में एक मुकदमा पेश हुआ। एक व्यक्ति ने मोहल्लाह इब्नुर्रबीअ में एक दूसरे आदमी की दीवार के सहारे सड़क के किनारे बैठक बनाने का इरादा किया, ताकि अपने जानवरों और सवारियों की वह निगरानी कर सके। उसके पड़ोसी ने बैठक बनाने से रोक दिया और कहा कि वह सार्वजनिक रास्ता है, इस पर कोई व्यक्ति कुछ नहीं बना सकता। दोनों में तकरार हुई और खतरा पैदा हो गया कि झगड़ा न हो जाए। अन्त में दोनों ने तै किया कि काजी शहर के पास जाकर इस बारे में फैसला कराएं। दोनों ही काजी हम्मास को नही पहचानते थे। दोनों ने अदालत का रूख किया, एक आदमी से काजी हम्मास के बारे में मालूम कर रहे थे कि उनको एक प्रतिष्ठित, गंभीर बुजुर्ग नजर आए। वे पानी का घड़ा उठाए हुए थे। इन दोनों ने आगे बढ़कर उन से काजी साहब के बारे में पूछा तो काजी हम्मास ने कहा कि क्या बात है? दोनों ने कहा कि एक मामले में हम दोनों का मतभेद है, उसका हल चाहते हैं, काजी साहब ने कहा कि अपना विवाद बयान करो, काजी तुम्हारे सामने ही खड़ा है, तो पहले आदमी ने जो वादी था कहा कि आप घड़ा तो नीचे रख दें। क़ाज़ी साहब ने जवाब दिया यह जमीन राहगीरों का हक है, मैं अपना घड़ा रखकर रास्ता गुज़रने वालों को तंगी में डालना नहीं चाहता हूं।

वादी ने कहा कि आपने तो फैसला ही कर दिया। फिर उसने दिल में सोचा कि क़ाज़ी साहब ने जब अपना घड़ा रास्ते में रखना पसन्द नहीं किया तो वे मुझे रास्ते में बैठक बनाने की अनुमति कैसे देंगे? वह सलाम करके वापस हो गया और अपने पड़ोसी से क्षमा मांग ली।

सत्य बात कहने की एक अनोखी मिसाल देखिए हुकूमत के प्रभावशाली मंत्री ने काजी हम्मास से कहा कि आप सरकारी पत्रों में मेरा नाम पहले लिखा कीजिए तो उन्होंने कहा कि यह नियम के विरुद्ध है और हमेशा इस प्रकार लिखते रहे : चीफ़ जस्टिस हम्मास बिन मर्वान की ओर से मंत्री इब्नि साइग के नाम।

काजी हम्मास ने अपनी न्यायिक जिन्दगी के ऐसे नमूने छोड़े हैं जो दुन्या के लिए मार्ग दिखाने वाले उसूल बने रहेंगे।

तयम्मुम

सूरतुन्निसा – ४३

ऐ ईमान वालो ! तुम नशे की हालत में नमाज़ के पास न जाओ और नजासत (नापाकी) की हालत में भी जब तक गुस्ल (स्नान) न कर लो। अगर बीमार हो या सफर में हो और पानी न मिले तो पाक मिट्टी से मुंह और हाथों का मसह कर के तयम्मुम कर लो। (बाद में नशा करना बिल्कुल हमराम हो गया।)

Mob: 9415006053

Mohd. Irfan
Proprietor

न्यू करीम ज्वैलर्स

NEW KAREEM JEWELLERS

Shop No. 1 Balad Market, Opp. Ek Menara Masjid, Akbarigate, Lucknow. Ph.: (S) 2260890

इंसानी ज़िन्दगी में इबादत की अहमियत

मोहम्मद हारून रशीद

इंसान की जिन्दगी में इबादत बहुत अहमियत रखती है? यह बात उस वक्त तक ठीक से समझ में नही आ सकती जब तक हमें यह मालूम न हो कि इन्सान की जिन्दगी का मकसद क्या है? और यह क्यों इस दुनिया में आया है? हम देखते हें कि इस दुनिया में इन्सान को एक गैर मामूली मकाम हासिल है, वह अपने कमजोर और नातवां वजूद के साथ आसमान और जमीन की हर चीज पर हुकूमत करता है और इस दुनिया का हर जर्रा उसकी खिदमत में मसरूफ है इन्सान को अपना पेट भरने के लिए फसलें उगाने की जरूरत होती है, तो दुनिया की मशीनरी का हर हर पुर्जा उसकी मदद के लिए हरकत में आ जाता है। वह जानवर जो इंसान से कई गुना ज्यादा ताकत के मालिक हैं, उसके आगे राम होकर जमीन हमवार करते हैं, जमीन अपनी तमाम तवानाइयां खर्च करके बीज में से कोपल निकलती है उस कोपल को पौधा और पौधे को पेड़ बनने के लिए गर्मी की जरूरत होती हे तो सूरज अपनी किरने निछावर करता है, पानी की जरूरत होती है तो बादल उस पर अपनी पूंजी लुटाते हैं, हवा की जरूरत होती है तो हवा उसे लहलहा कर परवान चढ़ाती हैं गरज दुनिया की तमाम कूवतें अपन सारा जोर इसलिए खर्च करती हैं कि इन्सान की भूक मिटे और उसकी जिन्दगी का सामान मुहैया हो।

यह तो एक मिसाल थी। आप अपने आस पास पर नजर डालकर देखिये आपको नजर आएगा कि आसमान से लेकर जमीन तक तमाम खुदाई कारिंदे आपकी खिदमत में लगे हुए हैं।

अगर आप इस बात पर ईमान रखते हैं कि दुनिया के हर जर्रे का पैदा करने वाला खुदा और उसी ने इस पूरे जहां को आपका खादिम बनाया है तो आपको इन सवालों का जवाब समझने में देर नहीं लगेगी कि तमाम कायनात को आपकी खिदमत पर इस लिए निछावर किया गया है कि आप एक बहुत बुलंद और आला काम पर मामूर हैं और वह काम है इबादत और बंदगी।

यही काम हमारी जिन्दगी का मकसद है और इसके लिए हम इस दुन्या में भेजे गए हैं, कुरआन में अल्लाह का इरशाद है – अनुवाद – और मैंने जिन्नात और इन्सान को सिर्फ इसलिए पैदा किया कि वह मेरी बंदगी करें।

कुरआन के इस इरशाद और इसकी मजकूरा ऊपर की तशरीह से इबादत की अहमियत खुद बखुद वाजेह हो जाती है। इबादत इसलिए अहम है कि वह हमारी जिन्दगी का मकसद है इबादत। इसलिए अहम है कि इसी के लिए हम दुनिया में आए हैं इबादत इसलिए अहम है कि वह हमारे अशरफुल मखलूकात बनने की वजहे जवाज़ है और इसी के बल पर हम दुनिया की हर चीज से खिदमत लेते है।। अगर हम इबादत के इस फरीजे को अंजाम न दें तो हमारी मिसाल उस मुलाजिम की सी होगी जो अपने मालिक से तन्ख्वाह पूरी वसूल करे लेकिन वही मालिक उसे किसी बात का हुक्म दे तो वह मानने से इनकार कर दे जिस तरह यह मुलाजिम सजा के लायक हैं उसी तरह यह शख्स अजाब का मुस्तहक है जो दुन्या की तमाम नेअमतों से फायदा उठाता है लेकिन इबादत के फरीजे को पूरा नही करता।

दूसरी तरफ वह शख्स जो इबादत को ठीक ठीक अंजाम देता है। उसकी मिसाल उस फरमाबरदार मुलाजिम की सी है जिसके आराम व तफरीह से भी मालिक खुश होता है जिस तरह औकात में उस मुलाजिम का खाली बैठना और आराम और तफरीह करना भी मुलाजिमत में शुमार होता है इसी तरह एक फरमाबरदार बन्दे की इबादत सिर्फ नमाज रोजे हज और जकात पर मुनहसिर नहीं रतही बल्कि उसकी जिन्दगी का हर कदम इबादत बन जाता है उस पर भी उसे सवाब मिलता है। उसका सोना–जागना, उठना–बैठना यहां तक कि हंसना बोलना भी बंदगी में शुमार होता है। बंदगी का मतलब ही अस्ल में यह है कि इंसान अपने आपको खुदा का ताबे

फरमान समझकर अपनी पूरी जिन्दगी उसी के अहकाम के मुताबिक गुजारें। इसलिए इबादत किसी खास जगह किसी खास वक्त या किसी खास काम के साथ मखसूस नहीं है। अगर आप अपनी जिन्दगी को खुदा के अहमकाम के मुताबिक बनाए हुए हैं तो आपकी जिन्दगी का हर काम इबादत है आपकी तिजारत, आपकी मुलाजिमत यहां तक कि आपकी जायज तफरीहें भी इबादत हैं बशर्ते कि वह खुदा के अहकाम के मुताबिक हों और नेक नियती के साथ हों।

जब किसी कौम के बेशतर लोग अपनी इज्तमाई जिन्दगी की इस तरह इबादत बना लेते हैं तो जिन्दगी की तमाम कामरानियां उनके कदम चूमती हैं और अल्लाह का वह वादा पूरा होता है जिसका जिक्र कुरआन में अल्लाह ने किया है। इरशाद है – तुम में से जो लोग ईमान लाए और जिन्होंने नेक काम किए उनसे अल्लाह ने वादा किया है कि उनको यकीनन जमीन की खिलाफत अता करेगा जिस तरह उने पहले लोगों को अता की है और जरूर उनके दीन को जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया मजबूती के साथ कायम करेगा और बिल यकीन उनकी हालते खौफ को अम्न से बदल देगा (बस) वह मेरी इबादत करे और मेरे साथ किसी को शरीक न करे।

खुदा ने आज तक उस कौम की हालत नहीं बदली न हो जिस को ख़याल आप अपनी हालत के बदलने का

लंदन में कादियानी प्रचारक शाहिद कमाल का कबूले इस्लाम

माखूज़ (गृहीत)

लंदन (अल–अहरार) बरतानिया में कादियानी प्रचारक ४० साला शाहिद कमाल ने इस्लाम और कादियानियत मुताला करने के बाद सरेआम कादियानियत से तौबा करके इस्लाम कुबूल कर लिया, लंदन से संवाददाता अल–अहरार के मुताबिक उन्होंने कादियानी काइद मिर्जा मसरूर को लिखित तौर पर इस्लाम कुबूल करने के फैसले से सूचित कर दिया है। शाहिद कमाल के माता पिता का ताल्लुक हिन्दुस्तान से है वह अब बरतानवी शहरी हैं। नौ मुस्लिम शाहिद कमाल, कादियानी खलीफा मिर्जा मसरूर की हिदायतों पर इंग्लैण्ड के स्कूलों में कादयानियत का प्रचार करता था। उनहोंने पिछले जुमे (शुक्रवार) के दिन खत्म नुबूव्वत एकैडमी लंदन में मौलाना सुहैल बावा के हाथ पर इस्लाम कुबूल किया। इस मौके पर एक प्रोग्राम किया गया, जिस में नौ मुस्लिम शाहिद कमाल ने कहा कि वह अपनी सारी सलाहियतों को इस्लाम की हकीकी तालीमात को आम करने में लगा देंगे। शाहिद कमाल ने इस्लमा कुबूल करने के मुताल्लिक बताया कि मैं पैदाइशी कादियानी था। मैंने कादियानी के मुतालिक बहुत कुछ पढ़ा मगर मेरे दिमाग में ऐसे सुवाल थे जो कि खटक रहे थे। उन्होंने बताया कि मैं मिर्जा कादियानी (झूठा नबी) की किताबों का हर रोज मुताला करता था मगर जब खत्मे नुबूव्वत के रहनुमाओं से इलमी बहस पर इंटरनेट पर आगाज हुआ तो मुझे बहुत से सुवालों का जवाब मिलता गया, इसके बाद मैंने इस्लाम और कादियानियत का अध्ययन तकरीबन डेढ़ साल तक जारी रखा, उसके बाद मैंने कादियानी लीडरों से अपने सुवालों और सच्चाई के बारे में पूछा तो वह मुझे मेरी तसल्ली नहीं करा सके और मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि कादियानी अकाईद इस्लामी अकाईद से बिल्कुल अलग हैं। और कादियानियत का इस्लाम से दूर का भी कोई वास्ता नहीं है। वर्णनयोग्य है कि नौ मुस्लिम शाहिद कमाल का कादयानियों में अपनी इल्मी काबिलियत के द्वारा मुमताज हैसियत के मालिक समझे जाते थे। पेशे के लिहाज से वह कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के महकमे से जुड़े हैं। उन्होंने बच्चों में तालीमी सलाहियत में इजाफे के लिए कई साफ्ट वेयर प्रोग्राम डिजाइन किये हैं। नौ मुस्लिम शाहिद कमाल लंदन के फारिस्ट गेट फुल होम में रहते हैं इनके इस्लाम कबूल करने पर मजलिसे अहरार इस्लाम हिन्द के सारे लीडरों ने खुशी का इजहार किया है। (अल–अहरार पन्द्रह रोजा)

भाइयो! कादियानियत एक फित्ना है इससे बचो और अपने भाइयों को बचाओ। कादियानियत के उलझाए हुए किसी सुवाल में उलझे हों तो फौरन शोब–ए–दावत व ईर्शाद नदवतुल उलमा को खत लिखें मुनासिब जवाब दिया जाएगा और लिट्रेचर मुहय्या किया जाएगा इंशा अल्लाह।

रहमान के बन्दे

अब्दुर्रशीद खैरानी

अल्लाह तआला की किताब कुरआन पाक में अल्लाह तआला के फरमाबरदार बन्दों की पहचान बताते हुए फरमाया गया है –

और रहमान के बन्दे वो हैं जो जमीन पर आजिज़ी (नम्रता) के साथ चलते हैं और जब जाहिल (मूर्ख) लोग उनसे बात करते हैं तो वो कह देते हैं कि तुमको सलाम। और जो अपने रब के आगे सजदा और क़ियाम में (खड़े रहकर) रातें गुजारते हैं और जो कहते हैं कि ऐ हमारे रब! जहन्नम के अजाब को हम से दूर रख। बेशक उसका अजाब पूरी तबाही है। बेशक वह बुरा ठिकाना है और वह लोग जब खर्च करते हैं तो न तो फुजूल खर्ची करते हैं और न तंगी करते हैं और उनका खर्च एतिदाल के साथ होता है न जरूरत से जियादा न कम। और वह जो अल्लाह के साथ किसी को नहीं पुकारते और जिस जानदार को मार डालना अललाह ने हराम किया है उसे कत्ल नहीं करते, मगर जायज तरीके (यानी शरीअत के मुताबिक) से और बदकारी नहीं करते और जो यह काम करेगा सख्त अजाब में पड़ा होगा। (सूरः फुरकान आयत ६३ से ६८)

इन आयतों में अल्लाह तआला के फरमांबरदार बन्दों की पहचान बतायी गयी है। मोमिन बन्दा इन अवसाफ (गुणों) को अपनाने वाला होता है।

१. रहमान के बन्दे की पहली पहचान जमीन पर बहुत ही आजिज़ी (नम्रता) से चलता है। अल्लाह तआला फरमा रहा है कि मोमिन बन्दा अल्लाह की इस जमीन पर बहुत ही आजिजी से चलता है उसकी चाल में घमण्ड नही होता। जिन लोगों के दिल में अल्लाह का यकीन और खौफ पैदा हो जाता है वो हर मामले में नर्म व रहमदिल बन जाते हैं। अल्लाह का खौफ उनसे बड़ाई की सोच को खत्म कर देतो है।

२. मोमिन बन्दों की दूसरी पहचान यह बताई गई है कि इनका सामना जब किसी जाहिल, बेवकूफ जिद्दी व नासमझ आदमी से होता है तो उसकी बातों का जवाब न देते हुए वहां से खामोशी के साथ हट जाते हैं।

३. मोमिन बन्दे की तीसरी पहचान वह गुण बताया गया है कि अल्लाह तआला की इबादत और फरमाबरदार में पूरी रात गुजारते हैं। बहुत कम सोते हैं और दुआ करते हैं कि ऐ अल्लाह हमको जहन्नम के अजाब से दूर रखना जो कि हमेशा का सख्त अजाब है और रहने की बहुत ही बुरी जगह है।

४. मोमिन बन्दे का चौथा वस्क (गुण) बताया गया कि वे न तो फुजूल खर्च होते हैं और नहीं कंजूस होते हैं बल्कि मियानारवी (बीच का रास्ता) अपनाते हैं। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम ने फरमाया है कि जो इफरात (अधिकता) और तफरीत (कमी) से बचता है वह कभी फकीर व मुहताज नहीं होता। एक हदीस में है कि अमीरों में फकीरों में इबादत में मियानारवी (बीच का रास्ता) बहुत ही बेहतर और अच्छी चीज है।

५. और जो अल्लाह तआला के सिवाय किसी और को नहीं पुकारते यानी शिर्क नहीं करते यह पांचवी पहचान बतायी गयी है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अललाह तआला तुम्हें इससे मना फरमाता है कि तुम खालिक (अल्लाह) को भूलकर मखलूक की इबादत करो और इससे भी मना फरमाता है कि अपने कुत्ते को तो पालो और अपने बच्चों को कत्ल कर डालो और इसेस भी मना फरमाता है कि अपनी पड़ोसिन से बदकारी करो। असामा जहन्नम की वादी का नाम है यही वह वादी है जिसमें जानियों (बदकारी करने वालों) को अज़ाब किया जाएगा।

६. मोमिन बन्दे की छटवीं पहचान बताई गयी है कि मोमिन बन्दा अल्लाह तआला की हराम की कमाई गई जान को बिना हक के कत्ल नहीं करते यानी अल्लाह तआला ने जिनका कत्ल करना बिना कारण व हक के हराम ठहराया है ऐसों को कत्ल नहीं करते जबकि शरीअत इसकी इजाज़त न दे इसलिए अल्लाह तआला ने मुसलमानों का आपस में खून व क़त्ल को हराम ठहराया है।

७. मोमिन शख्स कभी भी बदकारी नहीं करते। यह मोमिन बन्दे का जरूरी वस्फ है। बदकारी करने वाले मर्द और औरत के लिए सख्त अजाब होना बताया गया। इस जुर्म की सजा दुनिया में भी सख्त है और

आखिरत में भी सख्त है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फरमान है कि शिर्क के बाद इससे बड़ा गुनाह कोई नहीं कि इन्सान अपना नुत्फा (वीर्य) उस रहम में डाले जो उसके लिए हलाल नहीं।

८. इसी सूरत की आयत ७२ में आठवां वस्फ बयान करते हुए फरमाया गया है कि और वे जो झूठी गवाही नहीं देते।

मतलब यह कि मोमिन बन्दा झूठ नहीं बोलता। हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या मैं तुम्हें सबसे बड़ा गुनाह न बताऊ। तीन बार यही फरमाया सहाबा (रज़ि०) ने कहा – हां या रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) फरमाया अल्लाह के साथ शिर्क करना, मां–बाप की नाफरमानी करना, इस वक्त तक आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) तकिया लगाये हुए बैठे थे और फिर उससे अलग होकर फरमाया – सुनो और झूठी बात कहना, सुना और झूठी गवाही देना, इसे बार–बार फरमाते रहे यहां तक कि रावी कहते हैं कि हम अपने दिल में कहने लगे कि काश! आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अब खामोश हो जाते। इससे यह साफ हो जाता है कि झूठ बोलना, झूठी गवाही देना बहुत ही बड़ा गुनाह है।

६. इसी आयत में आगे कहा गया है कि और जब किसी बेहूदा चीज पर से उनका गुजर होता है तो संजीदगी (बुजुर्गाना तौर) से गुजर जाते हैं। मोमिन बन्दा हमेशा हर पल अल्लाह का खौफ रखता है इसलिए जब भी किसी बेहूदा व गैर इस्लामी माहौल या मौका सामने आता है तो अपने आप को बचाते हुए खामोशी से उस जगह से हट जाते हैं जिससे गुनाहों से बच जाते हैं।

१०. मोमिन बन्दे का दसवां वस्फ बताया गया है कि और जब भी उनके रब की आयतें सुनाई जाती हैं तो वो अन्धे व बहरे होकर इन पर नहीं गिरते और वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब! हमको हमारी बीवियों और हमारी औलाद की तरफ से आखों की ठण्डक अता फरमा और हमको परहेजगारों का इमाम बना।

मोमिन बन्दे अल्लाह की किताब कुरआन पाक की आयतें सुनकर उसको समझते हैं, गौर करते हैं फिर उसपर अमल करते है। अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फरमानों पर बिना किसी हिचकिचाहट और फेर–बदल के मानकर उसका पालन करते हैं।

११. मोमिन बन्दा हमेशा अल्लाह तआला से दुआ करता रहता है। अपनी बीबी और औलाद को नेक व सालेह बनाने की दुआ करता है ताकि उसको सुकून हासिल रहे। इस तरह मोमिन बन्दों की पाक सिफतें बता कर उनके सब्र के बदले में उन्हें जन्नत मिलने का अल्लाह तआला वादा फरमाता है सारांश यह कि मोमिन बन्दे के निम्न अवसाफ (गुण) होते हैं:–

१. जमीन पर आजिजी (नम्रता) के साथ चलते हैं।

२. जाहिलों से दरगुजर व किनाराकशी करते हैं।

३. रात में अल्लाह की इबादत करते हैं।

४. जहन्नम के अजाब से अल्लाह की पनाह चाहते हैं और गुनाहों से दूर रहते है।

५. अल्लाह तआला का दिया माल खर्च करते हैं बीच का रास्ता अपनाते हैं न फुजूल खर्ची करने में और न कंजूसी करते है।

६. अल्लाह तआला के साथ किसी दूसरे को न ही पुकारते और न ही माबूद मानते हैं।

७. शरीअत के खिलाफ किसी को कत्ल नहीं करते।

८. झूठ नहीं बोलते और झूठी गवाही नहीं देते।

९. बेहूदा चीजों से दूर रहते हैं।

१०. अल्लाह की किताब की आयतों को सुनते हैं तो समझ कर उन पर अमल करते है।

११. बदकारी जिनाकारी से दूर रहते हैं।

१२. अपनी बीबी और औलाद के लिए नेक व सालेह बनानें की अल्लाह से दुआ करते रहते हैं।

अल्लाह से दुआ है कि हम सब को भी अपने मोमिन बन्दों में शामिल फरमा कर इन सिफतों को अपनाने की तौफीक अता करे।

दुआ

ऐ हमारे रब! हमारी भूल चूक और हमारी ख़ताओं पर हमारी पकड़ न फरमा। ऐ हमारे रब ! हम पर कोई ऐसा सख्त हुक्म न भेजिए जैसा हम से पहले लोगो पर भेजा और हम पर ऐसा बोझ न डालिये जिसे सहारने की ताकत हम में न हो और हम को मुआफ़ कर दीजिए और हम को बख्श दीजिए और हम पर रहम कीजिए और हक के मुखालिफीन पर हमारी मदद कीजिए। (अलबकरा : २८६)

ईसाले सवाब के मसाइल

अज़ इफ़ादाते हज़रत मौलाना
अ़ब्दुश्शकूर फ़ारूक़ी (रह़०)

चूंकि इसाले सवाब के तरीक़े में आजकल बहुत रस्म व रवाज की मिलावट हो गयी है इस वजह से मुनासिब मालूम होता है कि ईसाले सवाब के कुछ ज़रूरी मसाइल और उसका शरअ़ी तरीक़ा बयान कर दिया जाए ताकि लोग सुन्नत का तरीक़ा अपनाएं और बिदअ़त के तरीक़े से बचें, सब से पहले बिदअ़त की तारीफ़।

लुग़त में हर नई चीज़ को बिदअ़त कहते हैं इसी लिहाज़ से ह़ज़रत उ़मर (रज़ि०) ने तरावीह़ की ख़ास जमाअ़त को बिदअ़त फ़रमाया था। इस लिह़ाज़ से उ़लमा ने बिदअ़त की पांच किस्में की हैं : बिदअ़ते वाजिबा, बिदअ़ते मुस्तह़ब्बा, बिदअ़ते मुबाह़ा, बिदअ़ते मक्रूहा, बिदअ़ते मुह़र्रमा। लेकिन शरीअ़त की इस्तिलाह़ (परिभाषा) में बिदअ़त उस चीज़ को कहते हैं जो दीनी कामों में से समझी जाए और किसी शरअ़ी दलील से उसका सुबूत न हो, न किताबुल्लाह से, न अह़ादीस से, न मुजतहिदीन के इज्माअ़ से न शरअ़ी क़ियास से, इस मअ़ना (अर्थ) में बिदअ़त की किस्में नहीं इस मअ़ना की बिदअ़त तो बस बुरी ही बिदअ़त है जिस के बारे में सह़ीह़ ह़दीस में आया है। हर बिदअ़त गुमराही है। लिहाज़ा दीन का जो काम किया जाए तह़क़ीक़ कर ली जाए कि वह किसी शरअ़ी दलील से साबित है या नहीं? अगर साबित न हो तो वह चाहे जितना अच्छा लगे और चाहे जिस के अ़मल में रहा हो उससे बचें इसलिए कि ह़दीस में उस पर वअ़ीद है।

अहले सुन्नत का इस पर इज्माअ़ है कि अगर कोई शख़्स अपनी इ़बादतों का सवाब चाहे माली हों जैसे सदक़ा वग़ैरह,या बदनी हों जैसे नमाज़, रोज़ा क़ुर्आने मजीद की तिलावत वग़ैरह किसी दूसरे को देदे तो अल्लाह तआ़ला अपने फ़ज़्ल से उन इ़बादतों का सवाब उस को पहुंचा देता है। हां इस में इख़्तिलाफ़ है कि फ़राइज़ का सवाब भी दूसरे को पहुंचाया जा सकता है या सिर्फ़ नवाफ़िल का और इस में भी इख़्तिलाफ़ है कि ज़िन्दों को भी यह सवाब पहुंच सकता है या सिर्फ़ मुर्दों को। (लेकिन नवाफ़िल के सवाब पहुंचने में और मुर्दों को सवाब पहुंचने में इख़्तिलाफ़ नहीं है)

अगर कोई शख़्स अपनी इ़बादत का सवाब दूसरे को देदे तो ऐसा नहीं है कि उसको सवाब नहीं मिलता बल्कि उसको भी सवाब मिलता है और जिसको बख़्शा है उसको भी मिलता है और जितनों को उसके साथ शामिल कर लें सब को मिलता है और पूरा पूरा मिलता है तक़्सीम हो के नहीं मिलता। यह महज़ अल्लाह की इनायत है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को भी ईसाले सवाब जाइज़ है। ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि०) ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद कई उ़म्रे कर के आप को सवाब पहुंचाया।

ईसाले सवाब का तरीक़ा यह है कि जिस इ़बादत का सवाब पहुंचाना मक़्सूद हो उस इ़बादत से फ़ारिग़ हो कर अल्लाह तआ़ला से दुआ करें कि ऐ अल्लाह इस इ़बादत का सवाब फ़ुलां की रूह़ को पहुंचा दे।

जैसे क़ुर्आन मजीद थोड़ा सा या पूरा पढ़कर कुछ तस्बीह़ात वग़ैरह पढ़कर या नफ़्ल नमाज़ पढ़कर या किसी मुह़ताज को खाना खिलाकर या देकर, या नफ़्ल रोजे रखकर या नफ़्ल ह़ज कर के अल्लाह तआ़ला से दुआ करे कि ऐ अल्लाह इस इ़बादत का सवाब फ़ुलां की रूह़ को बख़्श दीजिए।

आज कल जो यह रवाज हो गया है कि खाना या मिठाई सामने रखकर फ़ातिह़ा देते हैं शायद यह इस तरह़ दुआ होगा कि किसी बुज़ुर्ग ने किसी मैयित को माली व बदनी दोनों इ़बादतों का सवाब पहुंचाना चाहा होगा तो उन्होंने एक ही मजलिस में मुह़्ताज को खाना भी खिलाया होगा और तिलावत वग़ैरह कर के सवाब बख़्शा होगा जिसे देख कर बाज़ नावाक़िफ़ समझे होंगे कि दोनों का एक साथ होना ज़रूरी है हालांकि फ़ातिह़ा में खाना या मिठाई सामने रखने को ज़रूरी समझना बुरा है इस रस्म को तर्क करना चाहिए। खाना किसी मुह़ताज को खिला दें या दे दें, फिर अगर सूरे वग़ैरह का सवाब भी पहुंचाना चाहें तो उसे पढ़कर दोनों का सवाब बख़्श दें।

अपने मुर्दों को ईसाले सवाब और उनके लिए मग़्फ़िरत की दुआ बराबर किया करो।

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्न : फातिहा का सहीह तरीक़ा क्या है ?

उत्तर : पहले तो आप समझें कि फातिहा क्या है? फातिहा के मअ्ना (अर्थ) लुग़त (शब्दकोश) में "जीतने वाली" या "खोलने वाली" हैं। क़ुर्आन मजीद में पहली सूरत का नाम "सूरतुलफातिहा" है लेकिन यहां आपके सुवाल का मक़्सद फातिहा से इसाले सवाब है, किसी मरे हुए को सवाब पहुंचाना है यानी एक शख़्स ने कोई नेकी की उस पर जो सवाब मिला उस को किसी मरने वाले को भेज देना चूंकि इस अमल में आम तौर से सूरतुलफातिहा पढ़ी जाती है इस लिए इस सवाब पहुंचाने के अमल को ईसाले सवाब कहा गया लेकिन अवाम में फातिहा देना कहा जाने लगा और अब अवाम इसे फातिहा ही के नाम से जानते हैं।

हां मरने वाले को फातिहे का सवाब पहुंचता है। उस का सहीह तरीक़ा यह है कि हर वह इबादत जो आप पर फ़र्ज़ वाजिब नहीं है जैसे क़ुर्आन मजीद की तिलावत चाहे कुछ सूरतें हों, नफ़्ल नमाज़ें, नफ़्ल अज़्कार कल्मा वग़ैरह नफ़्ल सद्क़ात, किसी ग़रीब को खाना खिला दिया या दे दिया, या ग़ल्ला दे दिया, कपड़ा दे दिया या कोई ज़रूरत पूरी करके अल्लाह तआला से दुआ की कि ऐ अल्लाह इसका सवाब फुलां को बख़्श दीजिए, अल्लाह तआला उस नेकी का सवाब उसकी रूह को इनायत फ़रमा देंगे, यह सवाब तो ज़िन्दों को भी दिया जा सकता है लेकिन यहां यह बात समझना ज़रूरी है कि सवाब भेजने वाला और जिस को सवाब भेजा जा रहा है यानी जिस को फातिहा दे रहे हैं और जो फातिहा दे रहा है दोनों का मुसलमान होना ज़रूरी है। सवाब भेजने वाला अगर ईमान वाला नहीं है तो उसको सवाब मिला ही नहीं वह दूसरे को कैसे दे सकता है इसी तरह जिस को फ़ातिहा दे रहे हैं उस का ख़ातिमा इस्लाम पर नहीं हुआ है तो उसको सवाब पहुंच ही नहीं सकता।

बाज़ उलमा का कहना है कि बदनी इबादत का सवाब यानी नफ़्ल नमाज़ रोज़ा या तिलावत वग़ैरह का सवाब दूसरे को नहीं दिया जा सकता सिर्फ़ माली इबादतों का सवाब बख़्शा जा सकता है लेकिन अहनाफ़ की तहक़ीक़ है कि माली व बदनी दोनों इबादतों का सवाब दूसरे को बख़्शा जा सकता है। इसी लिये आम तौर पर सवाब बख़्शने की दुआ करते वक़्त सूरतुलफातिहा कोई और सूरत क़ुल हवल्लाहु वग़ैरह नीज़ दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दुआ करते है।

प्रश्न : हमारे यहां फातिहा का तरीक़ा यह है कि खाना या मिठाई सामने रखकर खुशबू सुलगा कर फातिहा देने वाला एक बार अल्हमदु शरीफ़, तीन बार क़ुलहुवल्लाहु फिर दुरूद शरीफ़ पढ़ कर दुआ करता है कि ऐ अल्लाह इस खाने को ग़रीब के देने का सवाब और जो कुछ हमने पढ़ा है उसका सवाब फ़ुलां की रूह को बख़्श दीजिए और अगर किसी बुज़ुर्ग की फ़ातिहा है तो मिठाई ग़रीब को देने की बात नहीं कहते सिर्फ़ पढ़ने का सवाब बख़्शते हैं और मिठाई वगैरह तबर्रुक के तौर पर खाते हैं। इस तरह फातिहा करना कैसा है?

उत्तर : सहाब–ए–किराम में इस तरह फ़ातिहे का रिवाज न था फिर भी अगर इस तरीक़े को ज़रूरी न जाने और खाना ग़रीब को पहुंचा दे तो उम्मीद है कि सवाब पहुंच जाएगा लेकिन बुज़ुर्गों की फ़ातिहा में जो मिठाई रखी और उसको ग़रीब को देने की नीयत न की तो उसका सवाब ही न मिला न बुज़ुर्ग को पहुंचा खुद खा लेने का सवाब नहीं मिलता कि बख़्शा जाए न अमीरों को खिला कर सवाब बख़्शा जाताहै उस मिठाई का तबर्रुक हो जाना बिल्कुल समझ में आने वाली बात नहीं। हां वह बुज़ुर्ग ज़िन्दा होते और वह मिठाई इनायत फ़रमाते तो तबर्रुक कह सकते थे। यूं तो हर चीज़ तबर्रुक है कि अल्लाह तआला की दी हुई है। अच्छा तरीक़ा यही है कि पहले मुस्तहिक़ को उसकी ज़रूरत की चीज़ दे दें फिर सवाब बख़्शें। कोई चीज़ मिठाई वगैरा बुज़ुर्गों से मन्सूब कर के फिर बतौर तबर्रुक खाना इस की मिसाल इस्लामी शरीअ़त में नज़र नहीं आती यह बाद की ईजाद है, इससे बचना चाहिए।

प्रश्न : ग्यारहवीं की फातिहा जो

हज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) को दी जाती है क्या उसे हर शख़्स नहीं कर सकता? उनकी फातिहा के तबर्रूक की तक़्सीम का बड़ा रिवाज है उस का क्या हुक्म है?

उत्तर : फातिहा यानी ईसाले सवाब तो हर मुसलमान हर सहाबी को कर सकता है तो हज़रत शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी (रह०) का दर्जा तो उनसे बहुत कम है उनको क्यों नहीं कर सकता। रहा उन की फातिहा के तबर्रूक की तक़्सीम का मस्अला तो इस पर हुक्म तो मुफ्ती हज़रात लगाएंगे हम इतना कहते हैं कि सवाब उसी का बख़्शा जा सकता है जिसे ग़रीब खाए या पाए। अगरचि अमीर मुसलमान को खिलाने पर भी सवाब मिलता है। मगर सवाब बख़्शी हुई मिठाई वग़ैरह किसी अमीर को न खाना चाहिए। अलबत्ता अगर अमीर मुसलमानों को खिला कर कहे कि इस का जो सवाब हो उसको फुलां को बख़्शता हूं तो गुंजाइश तो है मगर अस्लाफ़ में इस की कोई नज़ीर नहीं है।

प्रश्न : ईसाले सवाब का क्या फाइदा है?

उत्तर : ईमान वाले को ईसाले सवाब ख़ुद एक नेकी है जिस का बदला ईसाले सवाब करने वाले को मिलेगा और जिस को ईसाल सवाब किया गया है अगर उसे अपने गुनाहों की सज़ा मिलना है तो सवाब के बदले में या तो सज़ा उठा ली जाएगी या उसमें कमी की जाएगी, सवाब पाने वाला अगर किसी सज़ा का मुस्तहिक़ नहीं है तो उसके दरजात बुलन्द किये जाएंगे। मरने वालों से राब्ते का तो अब यही एक ज़रीआ़ है यानी उन के लिए ईसाले सवाब और मग़्फ़िरत की दुआ़।

प्रश्न : ईसाले सवाब की क्या दलील है?

उत्तर: एक सहाबी हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में आए और अ़र्ज़ किया कि मेरी मां का इन्तिक़ाल हो गया वह मुझ को कुछ वसीयत न कर सकीं, मेरा गुमान है कि अगर वह बोलतीं तो मुझे सदक़ा करने को कहतीं, तो क्या मैं उन की तरफ़ से सदक़ा करूं तो उनको सवाब पहुंचेगा ? हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया हां पहुंचेगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

एक शख़्स ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दर्याफ़्त किया कि मेरी मां का इन्तिक़ाल हो गया अगर मैं उनकी तरफ़ से सदक़ा करूं तो क्या उनको सवाब पहुंचेगा? आप ने फ़रमाया हां पहुंचेगा। उसने कहा मेरे पास एक बाग़ है मैं आपको गवाह बनाता हूं कि मैं ने अपनी मां की जानिब से उसको सदक़ा कर दिया। (सुनने अबी दाऊद)

इन रिवायतों में माली इ़बादतों के सवाब पहुंचाने का ज़िक्र है इन पर क़यास करके बदनी इ़बादतों के ईसाले सवाब को भी उ़लमा ने माना है।

प्रश्न : क्या बुज़ुर्गों से औलाद, रोज़ी, नौकरी, मुसीबत दूर होने और मरज़ दूर होने वग़ैरह की दरख़्वास्त की जा सकती है?

उत्तर: अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने अपने चचा के लड़के अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि०) को मुख़ातब कर के फ़रमाया था कि जब कुछ मांगों तो अल्लाह से मांगो, जब किसी से मदद चाहो तो अल्लाह से मदद चाहो और फ़रमाया कि अगर अल्लाह तुम को फ़ाइदा न देना चाहे तो सारी दुन्या के लोग मिल कर तुम को फ़ाइदा देना चाहें तो नहीं दे सकते, इसी तरह अगर अल्लाह तुम को फ़ाइदा देना चाहेतो सारी दुन्या के लोग मिलकर उस फ़ाइदे को रोक नहीं सकते। (तिर्मिज़ी) अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने सिखाया कि यूं कहा करो : ऐ अल्लाह जो आप अ़ता फ़रमाएं उसे कोई रोकने वाला नहीं और जो आप रोक लें उसे कोई देने वाला नहीं और आपके मुकाबले में किसी कोशिश करने वाले की कोशिश उस को फ़ाइदा नहीं पहुंचा सकती। (बुख़ारी)

क़ुर्आने मजीद में है : ऐ सुनने वाले अगर अल्लाह तआ़ला तुझे कोई नुक़सान पहुंचाना चाहे तो कोई उस नुकसान को दूर नहीं कर सकता और अगर वह तेरे लिये किसी ख़ैर का फैसला फरमाए तो उस खैर से कोई रोक नहीं सकता। (१०:१०)

लिहाज़ा औलाद, रोज़ी, शिफ़ा, नौकरी सब अल्लाह से मांगें बुज़ुर्गों से नहीं अलबत्ता ज़िन्दा बुज़ुर्गों से दुआ़ की दरख़्वास्त करें कि यह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से भी साबित है। और सहाब–ए–किराम से भी।

(पृष्ठ ४० का शेष)

बताते हैं कि अब ऐसे रोबोट बनाये जा रहे हैं जिनमें खुद की इन्टेलीजेंस होगी। उनकी सूझबूझ मनुष्यों की तरह ही होगी। यदि आपरेशन के दौरान चिकित्सक कोई ग़लती भी करेगा तो रोबोट उसे निर्देशित कर देगा कि वह ग़लती कर रहा है। इसके लिए रोबोट में सेंसर लगे होंगे। रोबोट को पहले से ही मनुष्य के शरीर की फिजियालाजी, एनाटमी और हिस्टोपैथालाजी पढ़ा कर रिकार्ड कर दी जायेगी। इसका सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि सर्जरी के दौरान रोबोट उन ऊतकों को नहीं काटेंगी जिन में कैंसर नहीं है। इसके अतिरिक्त सर्जरी में ज्यादा काटना नहीं पड़ेगा और न ही ज्यादा खून बहेगा।

चौथी किस्त

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

हज़रत सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम का ज़माना

अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी

सुल्हे हुदैबिया फत्ह में बदल गई

बाद में पेश आने वाले वाकिआत ने यह साबित कर दिखाया कि सुल्ह हुदैबिया से दर अस्ल इस्लाम के इकबाल व जफरमन्दी का एक नया खजाना खुल गया और इस की वजह से इस्लाम को जजीरतुल अरब में इस कदर तेजी के साथ फरोग हुआ कि इससे पहले कभी न हुआ था। इसने फत्हे मक्का का भी दरवाजा खोला और इसी के नतीजे में कैंसर व किसरा मकूकस नजाशी और अरब के अमीरों को इस्लाम की दावत दी गई। अल्लाह तआला ने सच फरमाया है : "मगर अजब नहीं कि एक चीज तुम को भली लगे और वह तुम्हारे लिए बुरी हो और खुदा ही बेहतर जानता है और तुम नहीं जानते। (अल्बकरा : १६)

जाहिर में लग रहा था कि सुल्हे हुदैबिया से मुसलमानों को जिल्लत उठाना पड़ी लेकिन अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) का हर काम अल्लाह के हुक्म से होता था उसके खुले हुए फाइदे जब सामने आए तो लोगों की आखें खुल गई चुनांचि इमाम जुहरी कहते हैं कि इस्लाम को इससे पहले इतनी बड़ी फतेह हासिल नहीं हुई जब दोनों फरीकों में सुल्ह हो गई तो लोग बिला खौफ व खतर एक दूसरे से मिलने लगे। साथ रहने और बात चीत करने का मौका मिला तो जिस समझदार आदमी से इस्लाम के बारे में गुफ्तगू हुई वह इस्लाम में दाखिल हो गया। इब्निहिशाम कहते हैं कि जुहरी के कौल की दलील यह है कि सुल्हे हुदैबिया में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ १४०० आदमी थे और दो साल बाद फत्हे मक्का के वक्त आप के साथ १०००० मुसलमान थे।

इस सुल्ह और मिलने से यह फाइदा भी हुआ कि जो अरब कबाइल अभी इस्लाम में दाखिल नहीं हुए थे इस नये दीन और उस के दायी को नई नजर से देखने लगे। उनके दिलों में इस्लाम की अज़मत और उसका वह ऐहतिराम (सम्मान) और महब्बत पैदा हो गई जो उससे पहले न थी। यह ऐसा तब्लीगी व दअवती फाइदा था जिस को मामूली नहीं का जा सकता। अगर्चि इसकी कोई कोशिश रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) और मुसलमानों ने नहीं की थी।

सुल्हे हुदैबिया दिलों की फातेह साबित हुई चुनांचि खालिद बिन वलीद ने (जो कुरैश के सवार अफवाज के सिपह सालार थे और जिन्होंने बड़े बड़े मारिके सर किये थे) सुल्हे हुदैबिया के बाद ही इस्लाम कबूल किया। दो ही माह बाद जंगे मूता हुई उस में खालिद ने ऐसी अकलमन्दी का मुजाहिरा किया कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने उन्हें सैफुल्लाह (अल्लह की तलवार) का लकब (उपाधि) दिया। वह राहे खुदा में हर तरह काम्याब व बामुराद और सुर्खरू व सरफराज हो कर निकले और अल्लाह तआला ने उनसे शाम का हिससा फत्ह करवाया।

अम्र बिन आस ने भी जो एक बड़े सिपहसालार और जरनैल थे और बाद में फातिहे मिस्र की हैसियत से सामने आये उन्होंने भी इसी जमाने में इस्लाम कबूल किया यह सुल्हे हुदैबिया के बाद हजरत खालिद की तरह मदीने में हाजिर हुए और इस्लाम लाए और ऊंचा मरतबा हासिल किया।

बादशाहों के नाम दावते इस्लाम के खतूत (पत्र) स० ६ हिजरी

सुलहे हुदैबिया के बाद जब आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुफ़्फ़ारे मक्का की तरफ से कुछ इत्मिनान हुआ तो आप (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने आस पास के बादशाहों को इस्लाम की दावत के पत्र भेजे। वहय कल्बी (रज़ि०) को कैसरे–रूम के पास, अब्दुल्लाह बिन हज़ीफा को खुसरो परवेज बादशाहे ईरान के पास, हतिब बिन वलतअ़ को अज़ीज़ मिस्र के पास, उमरू (रज़ि०) बिन उम्मिया को नजाशी बादशाह हब्श के पास, सलीत (राज़) बिन अमरू को यमामा के रईसों के पास, शुजाअ बिन वहब (रज़ि०) को हारिस गसानी के पास खत ले जाने की खिदमत सुपुर्द हुई।

गज़व–ए–खैबर सन ७ हिजरी

खैबर मदीना और शाम के बीच में यहूदियों का एक जंगी केन्द्र था।

यहां उनके बहुत से क़िले थे। जहां जहां मुसलमान पहुंचते जाते थे, यहूदी वहां से हट कर खैबर में दम लेते थे और वहां के सरदार अरब के रईसों को लड़ाई पर आमादा करते थे। आंहजरत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने चाहा कि उन से सुलह का कोई समझौता हो जाए मगर उन्होंने न माना और लड़ाई जरूरी हो गई मुसलमानों ने सन् ६ हिजरी के अन्त या सन् ७ हिजरी के शुरू में खैबर पर चढ़ाई की। यहूदियों ने किला बन्द होकर लड़ाई शुरू किया। मुसलमानों को एक एक किला फतह करना पड़ा आखिर कई हफ्तों के बाद सारे किले सर हुए। कुल ९३ यहूदी इस लड़ाई में मारे गए। लड़ाई खत्म होन पर यहूदियों की दर्ख्वास्त पर जमीन की खेती यहूदियों के हाथ मे रहने दी गयी और मुसलमानों ने मालिकाना हक पर संतोष किया।

फतहे मक्का सन् ८ हिजरी

अल्लाह तआला ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुन्या में तौहीद (ऐकेश्वरवाद) की तालीम, मूर्तियों की पूजा मिटाने और अपने प्रिय घर काबा को जिस में तीन सौ साठ बुत रखे हुए थे बुत परस्ती की गन्दगी से पाक करने के लिए भेजा था, लेकिन कुरैश ने अभी तक इस काम को पूरा न होने दिया था और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी हुदैबिया के समझौतों की वजह से जो दस साल के लिए हुआ था, इस काम में जल्दी नहीं की लेकिन कुरैश ने समझौता तोड़कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मक्का पर चढ़ाई करने के लिए मजबूर कर दिया। कबील–ए–बनी खजाअ मुसलमानों का दोस्त था जिन पर कुरैश को तलवार उठाने का अधिकार नहीं था लेकिन उन्होंने एक दूसरे कबीला बनी बक्र की दोस्ती में जो बनी खजाअ का दुश्मन था, बनी बक्र के साथ बनी खजाअ पर हमला कर दिया। ठीक हरम (काबा) में इन बेचारों का खून बहाया। उनकी इस शरारत के बावजूद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कोई बदला नहीं लिया और कुरैश के पास आदमी भेजा कि वह बेगुनाह मारेजाने वालों का खूंबहा (वह धन जो किसी की हत्या करने पर उस के घर वालों को दिलाया जाए) अदा करें या बनी बक्र का साथ छोड़ दें या साफ साफ कह दें कि समझौता टूट गया। कुरैश ने कहा हां समझौता टूट गया। इस साफ जवाब के बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मजबूरन रमजान स० ८ हिजरी में दस हजार सहाबा (रज़ि०) के साथ मक्का रवाना हो गए। अब हालत बदल चुकी थी। मुसलमान बहुत बढ़ चुके थे। उनके पास साजो सामान भी काफी हो चुका था। कुरैश में उनके रोकने का दम नही था। इसलिए मामूली सी झड़प के बाद मुसलमान मक्का में दाखिल हो गए और इस शानोशौकत के साथ कि बड़े–बड़े सरदार इस्लामी शान देख कर डर गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको तसल्ली दी कि डरने का मुकाम नही है। काबा में दाखिल होने के बाद आप ने काबा का तवाफ (परिक्रमा) किया और सारे बुत निकाल कर फेंक दिये। उसके बाद आप ने मक्का के तमाम लोगों को इकटठा किया और उनके सामने तक़रीर (भाषण) की। यह विचित्र समय था एक ज़माना था जब हुजूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बे यरो मददगार मक्का से निकले थे। कुरैश का बच्चा बच्चा आप के खून का प्यासा था या आज यह दिन था कि इशारे पर जाने देने वाले दस हजार सहाबा (रज़ि०) साथ थे। दुश्मन सबके सब सामने मौजूद थे।

हर प्रकार के बदले का पूरा औसर था। चाहते तो एक इशारे पर सर तन से जुदा कर सकते थे। लेकिन आप तो सारी दुन्या के लिए सुख व शान्ति बना कर भेजे गए थे। आप से यह क्यों कर हो सकता था। आपने सबकी खताएं माफ कर दीं और फरमाया जाओ तुम सब लोग आजाद हो। अब सुफयान जो इस्लाम का कट्टर दुश्मन था, जिन्होंने ने हर मौका पर इस्लाम को नुक्सान पहुंचाया था, और जो हर लड़ाई में आगे आगे रहते थे, उन तक को हुजूर सल्ल० ने माफ कर दिया और केवल माफ ही नही किया बल्कि उस के सथ यह इज्जत बख्शी कि जो उनके घर में पनाह लेता उसे भी माफी मिल जाती। कुरैश पर इस दया व कृपा का बहुत प्रभाव हुआ और वह बड़ी संख्या में मुसलमान हो गए।

अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

●●●

मो० असलम

(S) 268845, 213736

(R) 268177, 254796

हाजी सफीउल्लाह

एण्ड सन्स

ज्वैलर्स

नगीना मार्केट

अकबरी गेट, लखनऊ

गड़बड़ झाला के सामने,

अमीनाबाद रोड, लखनऊ

जिन्न क्या कर सकते हैं?

अबू मर्ग़ूब

शैतान जिन्न नमाज़ ख़राब करता है:—

सहीह़ मुस्लिम किताबुस्सलाम के बाबुत्तअव्वुज़ में है कि उस्मान बिन अबुल आ़स (रज़ि०) ने हुज़ूर सल्ल० को इत्तिलाअ़ दी कि मेरे और मेरी इ़बादत के बीच शैतान आ पड़ा वह उसमें ख़ल्त मल्त कर रहा था। हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह शैतान था उसे 'ख़िंज़ब' कहते हैं जब उसका एह़सास (आभास) हो तो उससे अल्लाह की पनाह (शरण) मांगा करो या़नी ''अऊ़ज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम'' कह लिया करो और बाईं जानिब थुक थुका दिया़ करो।

ऊपर के बयान से मा़लूम हुआ कि शैतान को जो छूट मिली है उसमें उस को यह इख़्तियार भी मिला है कि लोगों को कुफ़्र व शिर्क पर उभारे, इ़बादात से रोके और बड़े या छोटे गुनाहों में फंसाए। शैतान जिन्नों के अ़लावा दूसरे जिन्नों को भी इस तरह़ के कामों पर क़ुदरत होगी और काफ़िर जिन्न शयातीन के साथ उनके कामों में शरीक भी होते होंगे लेकिन मुस्लिम जिन्न इन बुरे कामों से दूर रहते होंगे।

ध्यान देने की बात

ध्यान देने की बात यह है कि जिस तरह इन्सानों में ह़क़्क़ व बातिल (सत्य तथा असत्य) की लड़ाई बह़स व मुबाह़सा (वाद विवाद) जंग व जिदाल युद्ध तथा संग्राम) और जिहाद फ़ी सबीलिल्लाह (धर्म युद्ध) के रूप में है क्या इसी तरह जिन्नों में भी है? इस का कोई सुबूत (प्रमाण) हम को किताब व सुन्नत में नज़र नहीं आया। रहने की जगहों का झगड़ा हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के सामने जिन्नों के ज़रीअ़े आया मगर उन की आपस की लड़ाई का ज़िक्र (चर्चा) दादा आदम अ़लैहिस्सलाम के इधर किताब व सुन्नत में नहीं मिलता। अलबत्ता हिन्दू ह़ज़रात की मज़हबी किताब पुरान (जिस के बहुत से भाग हैं) में आए हुए किरदार जिन को राक्षस तथा देवता या सुर असुर का ज़िक्र मिलता है तो लगता है वह इन्सानी आबादी से पहले की जिन्नों की लड़ाइयां हैं। रामायन में जो हनुमान सुग्रीयो बाली और उनकी भालू बन्दर की फ़ौज, रावण और उसका ख़ानदान और उसकी फ़ौज सब जिन्न लगते हैं। लेकिन राम लक्ष्मण और सीता की मौजूदगी से लगता है कि आख़िरी नबी ह़ज़रत मुह़म्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम से पहले जिन्न इन्सानों में घुले मिले रहते थे और इन्सानों के लिए लड़ते भी थे लेकिन किसी इस्लामी जिहाद में उनकी कारगुज़ारियों का ज़िक्र नज़र से नहीं गुज़रा।

शैतान छुप कर वरग़लाता है

शैतान के वरग़लाने और बहकाने की जो बातें ऊपर बयान हुईं यह सारे काम छुप कर होते हैं, अल्लाह तआ़ला ने शैतान को यह क़ुदरत (सामर्थ्य) दी है कि वह इन्सानों के दिलों में अपनी बात डाले और इन्सान को बहकाए उसको यह भी ताक़त दी है कि वह इन्सानों के अन्दर दाख़िल हो उसकी ख़िलक़त (प्रकृति) के लिह़ाज़ से यह उसके लिए आसान है। ह़दीस में आया है कि शैतान आदम की औलाद में यानी इन्सानों की रगों में खून की तरह़ दौड़ता है। (मुस्लिम)

सूरत्तन्नास में वसवसा डालने वाले ख़न्नास के शर से रब की पनाह (शरण) मांगने की तालीम (शिक्षा) है। इब्निकसीर ने 'अल्वस्वासिल ख़न्नास'' की तफ़सीर में इब्नि अ़ब्बास का कौल नक़्ल किया है और उसको मुजाहिद और क़तादा का क़ौल भी बताया है कि शैतान इब्नि आदम के क़ल्ब पर लगा रहता है जब इन्सान ग़ाफ़िल हो जाता हे तो शैतान वसवसा डालता है और जब इन्सान अल्लाह को याद कर लेता है तो वह पीछे हट जाता है।

अफ़सोस कि बच्चा बीमार होता है तो डाक्टर के पास भी जाते हैं और आ़मिल या बुज़ुर्ग के पास भी कि कही जिन्नी आसेब तो नहीं है लेकिन सयाना बच्चा नमाज़ नहीं पढ़ता तो कोई फ़िक्र नहीं होती, ह़ालांकि उस बेनमाज़ी पर शैतान जिन्न पूरी तरह़ सवार है और उसका इ़लाज भी मुम्किन है।

इस्लाम की कहानी

अब्दुल कुद्दुस रूमी

मेरी खोज लगाने वाले स्पष्ट रूप से सुन लें!

मैं उन्हें अपने असली रूप में केवल कुरान–मजीद अथवा कुरान–मजीद पर अमल करने वाले इंसानों के जीवन ही में मिल सकता हूं।

मेरा नाम लेकर अपने आपको मुसलमान कहलाने वाले लोग जो कुरान–मजीद केवल जुबान से पढ़ते है और ह्रदय में उसके अनुसार चलने का कोई इरादा नहीं रखते! यदि उनके जीवन में आप मुझे खोजेंगे तो आपको बड़ी निराशा होगी क्योंकि मैं आपको उनके जीवन में नही मिलूंगा।

कुरान–मजीद में मेरे नमूने और सैम्पिल के लिये हज़रत मुहम्मद मुस्तफा–सल्लल्लाहो–अलयहे–वसल्लम को नमूना बताया है जिसका अर्थ यही है कि जो व्यक्ति मुझको (अथवा इस्लाम धर्म का) अपनाये उसके लिये यह अनिवार्य है कि वह अललाह तआला के पैगम्बर हज़रत मुहम्मद–सल्लल्लाहो–अलयहे– वसल्लम का तरीका ही अपनाये। धर्म के सारे काम उन्हीं के नमूने (अनुसार) पर किये जाएं। जिस बात और जिस काम को उन्होंने पसन्द किया और उस पर अमल करने को कहा उन बातों को अपनायें और जिन बातों या जिन कामों को उन्होंने ना पसन्द किया और जिन से रोका उन तमाम बातों से बचना और दूर रहना आवश्यक है और हर मुसलमान का यह कर्तव्य है कि वह ऐसा ही करे!

मुझे यह बात कहते हुए बहुत दुख हो रहा है कि इस समय जो लोग अपने आपको मुसलमान कहते हैं उनमें से अधिकतर ऐसे हैं जो इस कसौटी पर पूरे नहीं उतरते। उन्होंने अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद–सल्लल्लाहो–अलयहे–वसल्लम के आदर्शों को छोड़ कर खुदा और रसूल के दुश्मनों और मेरे विरोधियों का ढंग अपना लिया है। खुदा और रसूल का चाहा छोड़कर अपना मन चाहा मार्ग अपनाये हुए हैं। मेरी समझ में नहीं आ रहा है कि मैं ऐसे लोगों का धर्म "इस्लाम" कैसे समझूं जिनका सारा जीवन मेरी शिक्षा के विपरीत है।

आप लोग यह बात अच्छी तरह जानते और समझते होगें कि कोई नमूना और सैम्पिल स्वीकृत होने के बाद जो इस सैम्पिल पर पूरा न उतरेगा वो निरस्त कर दिया जायेगा।

इस्लाम धर्म में जिस प्रकार बहुत से काम करने को कहा गया है उसी प्रकार बहुत से कामों से रोका भी गया है। करने वाले कामों का करना आवश्यक ही है इसी प्रकार बचने वाले कामों से बचना भी आवश्यक है। हर मुसलमान पर फ़र्ज है कि वह गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अल्लाह के रसूल है, नमाज़ काईम करे, माल की ज़कात अदा करें रमज़ान के रोज़े रखें हज्ज भर का माल हो तो जिन्दगी में एक बार हज्ज करें।

इसी प्रकार बहुत सी बातें हराम, गुनाह और पाप मानी गयी हैं इनसे बचना और दूर रहना भी आवश्यक हैं।

जैसे झूठ बोलना, झूठी कसम खाना, झूठी गवाही देना, किसी पर तोहमत लगाना, झूठमूठ ऐब लगाना, बदनाम करना, नाहक किसी का माल, जायदाद ले लेना, किसी को सताना, तकलीफ पहुंचाना, किसी को कत्ल करना, मार डालना, जुआ सट्टा खेलना, शराब या कोई नशा करना, दूसरी कौमों की नकल करना, उनकी जैसी सूरत बनाना, उसके जैसा लिबास पहनना आदि।

इस प्रकार के और भी बहुत से काम हैं जिनसे मुसलमानों को बचना और दूर रहना चाहिए। अधिकतर लोग मुसलमान होने का दावा तो करते हैं परन्तु मुसलमान होने पर जिन कर्तव्य का अनुपालन करना चाहिए, वह नहीं करते।

अतः सच पूछिये तो ऐसे ही लोग मेरे प्रचार की राह में सबसे बड़ी रूकावट हैं। इसलिये मैं बिल्कुल स्पष्ट रूप से अपनी पहली बात फिर दोहराता हूं कि यदि आपको मेरी खोज है और आप मुझे मेरे असली रूप में देखना चाहते हैं तो आप ऐसे मुसलमानों की ओर से अपनी आंखे बन्द करके कुरान–मजीद के पन्नों में मुझे ढूंढिये।

अपने मन में डूब कर ....
पाजा सुरागे जिन्दगी ...
तू अगर मेरा नहीं बनता
न बन अपना तो बन

हज़रत सौदा(रज़ि०)

सादिका तस्नीम फारुक़ी

"हज़रत सौदा" आमिर बिन लुवइ खानदान से थीं जो कुरैश का एक मशहूर खानदान था, मां का नाम शमूस था, सकरान (रजि०) बिन अम्र से जो इनके बाप के चचा ज़ाद भाई थे शादी हुई थी।

आप नुबूवत मिल जाने के बाद शुरू ही में इस्लाम ले आयीं, इनके साथ उनके पति भी इस्लाम लाए, इसलिए उनको पुराने इस्लाम लाने वालों में गिना जाता था हबश की पहली हिजरत के समय तक हज़रत सौदा (रजि०) और उनके पति मक्का ही में ठहरे रहे परन्तु जब मुश्रिकीन के जुल्म व सितम की कोइ हद न रही और मुहाजिरीन का एक बड़ा गिरोह हिजरत के लिए तैयार हुआ तो उसमें हज़रत सौदा(रजि०) और उनके पति भी शामिल हो गये।

कई वर्ष हबशः में रहकर मक्का को वापस आयीं सकरान (रजि०) की कुछ दिन के बाद वफात (मृत्यु) हो गई।

अजवाजे मुतह्हरात (पत्नियों) में यह फ़ज़ीलत केवल हज़रत सौदा (रजि०) को मिली है कि हज़रत खदीज़ा (रजि०) के इन्तिकाल के बाद सबसे पहले वही मुहम्मद (सल्ल०) के निकाह में आयीं, हज़रत खदीजा (रजि०) के इन्तिकाल से मुहम्मद (सल्ल०) बहुत गमगीन व परेशान थे, यह हालत देखकर खौला बिन्ते हकीम (उस्मान रजि० बिन मजऊन की पत्नी) ने कहा कि आपको एक रफीक (सहायक) की जरूरत है, आपने फरमाया, हां घर बार बाल बच्चों का इन्तिजाम सब खदीजा (रजि०) के जिम्मे था। आप की इजाज़त से वह हज़रत सौदा (रजि०) के बाप के पास गयीं और जाहिलियत के तरीके पर सलाम किया फिर निकाह का पैगाम सुनाया, उन्होंने कहा हां मुहम्मद (सल्ल०) शरीफ आदमी है परन्तु सौदा (रजि०) से भी पूछ लो, यहां तक कि सब काम हो गया तो मुहम्मद (सल्ल०) खुद तश्रीफ ले गये और सौदा के बाप ने निकाह पढ़ाया, चार सौ दिरहम मेहर निश्चित हुआ, निकाह के बाद अब्दुल्लाह बिन जमआ (हज़रत सौदा रजि० के भाई) जो उस समय काफिर थे, आए और उनको यह हाल मालूम हुआ तो सर पर मिट्टी डाल ली कि क्या गजब हो गया, इस्लाम लाने के बाद अपनी इस नादानी पर हमेशा उनको अफसोस आता था। (जरकानी भाग ३ पेज नं० २६१)

हज़रत सौदा का निकाह रमजान सन दस नबवी में हुआ इसलिए उनके और हज़रत आइशा (रजि०) के निकाह का ज़माना करीब–करीब है इसलिए इतिहासकारों में इख्तिलाफ है कि कौन पहले की है। इब्ने इस्हाक़ की रिवायत है कि सौदा (रजि०) को पहल प्राप्त है और अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अकील हज़रत आइशा (रजि०) को पहल प्राप्त समझते हैं।

(३६ जरकानी भाग ३ पेज २६०)

कुछ रिवायतों में है कि हज़रत सौदा (रजि०) ने अपने पहले पति की ज़िन्दगी में एक ख्वाब देखा था उनसे बयान किया तो बोले कि शायद मेरी मौत का ज़मान करीब है और तुम्हारा निकाह रसूल (सल्ल०) से होगा अतः यह ख्वाब पूरा हुआ। (जरकानी भाग ३ पेज ३६० व तबकात इब्ने सअ़द भाग ८ पेज ३८ व ३६)

नुबूवत के तेरहवे साल जब आपने मदीना मुनव्वरः में हिजरत की तो हज़रत ज़ैद (रजि०) इब्ने हारसा को मक्का भेजा, कि हज़रत सौदा (रजि०) आदि को लेकर आयें, अतःवह और हज़रत फातिमा (रजि०) हज़रत ज़ैद (रजि०) के साथ मदीना आयीं।

सन दस हिजरी में जब मुहम्मद (सल्ल०) ने हज किया तो हज़रत सौदा (रजि०) भी साथ थी, वह बुलन्द व बाला और मोटी थी इस वजह से तेजी के साथ चल फिर नहीं सकती थी, इसलिए मुहम्मद (सल्ल०) ने इजाज़त दी कि और लोगों के मुज़दलफ़ा से रवाना होने से पहले उनको चला जाना चाहिए क्योंकि उनको भीड़ भाड़ में चलने से तकलीफ होगी।

(सही बुखारी भाग १ पेज २२८)

एक बार अज़वाज मुतहिरात (रजि०) मुहम्मद (सल्ल०) की खिदमत में हाजिर थी उन्होंने पूछा कि या रसूलल्लाह! हम में सबसे पहले कौन मरेगा? फरमाया कि जिसका हाथ सबसे बड़ा है। लोगों में जाहिरी माना समझे, हाथ नापे गये तो सबसे बड़ा हाथ हज़रत सौदा (रजि०) का था।(तबकात भाग ८ पेज ३८) परन्तु जब सबसे पहले हज़रत ज़ैनब (रजि०) का इन्तिकाल हुआ तो मालूम हुआ कि हाथ की बड़ाई से आप का मकसूद

सखावत और फय्याजी था, वाकिदी ने हज़रत सौदा (रजि०) का साले वफात चौवन हिजरी बताया है। परन्तु सिकात की रिवायत यह है कि उन्होंने हज़रत उमर (रजि०) के अखीर ज़मान–ए–खिलाफत में इन्तिकाल किया।

(उसुदुल ग़ाबा व इस्तिआब व खुलास–ए–तहज़ीब हालात सौदा)

मुहम्मद (सल्ल०) से इनकी कोई औलाद नहीं हुई, पहले पति (हज़रत सकरान रजि०) ने एक लड़का यादगार छोड़ा था, जिसका नाम अब्दुर्रहमान था, उन्होंने जंग् जलूला (फारिस) में शहादत हासिल की।

(जरकानी भाग २ पेज २६०)

हज़रत उमर (रजि०) ने २३ हि० में वफात पाई है इसलिए हज़रत सौदा (रजि०) की वफ़ात का साल २२ हि० होगा ख़मीस में यही रिवायत है और यही सबसे ज्यादा सही है।

(जरकानी भाग ३ पेज २६२)

अज़वाज मुतहिरात (पत्नियों) में हज़रत सौदा (रजि०) से ज्यादा कोई बुलन्द व बाला न था, हज़रत आयशा (रजि०) का कहना था कि जिसने उनको देख लिया, उससे वह छिप नहीं सकती थी।(सही बुखारी भाग २ पेज ७७) (जरकानी में है कि उनका शरीर लम्बा था।)(जरकानी भाग ३ पेज ४५६)

हजरत आयशा (रजि०) फरमाती है: सौदा रजि० के अलावा किसी औरत को देखकर मुझे यह ख्याल नहीं हुआ कि उसके क़ालिब (दिल) में मेरी रूह (आत्मा) होती।

फरमांबरदारी में वह तमाम अजवाज मुतहिरात से मुम्ताज (प्रतिष्ठित) थी आपने हज्जतुल विदा के मौक़ा पर अजवाज मुतहिरात को मुख़ातब करके फरमाया था कि "मेरे बाद घर में बैठना" (जरकानी भाग ३ पेज २६१) अतः हज़रत सौदा (रजि०) ने इस के लिए न निकलीं, फरमाती थीं कि मैं हज और उमरः दोनों कर चुकी हूं और अब अल्लाह के हुक्म के अनुसार घर में बैठूंगी। (तबक़ात भाग ८ पेज ३८)

सखावत और फय्याजी में भी बहुत बढ़–चढ़ कर थीं एक बार हज़रत उमर (रजि०) ने उनकी खिदमत में एक थैली भेजी, लाने वाले से पूछा इसमें क्या है? बोला दरहम, बोलीं खजूर की थैली में दरहम भेजे जाते हैं, यह कह कर उसी समय सब को बांट दिया। (इसाबा भाग ८ पेज ११८) वह तायफ की खालें बनाती थीं और उससे जो आमदनी होती थी उसको बहुत आजादी के साथ नेक कामों में खर्च करती थी।

(इसाबा ६५)

वह और हज़रत आयेशा (रजि०) आगे–पीछे निकाह में आयी थीं परन्तु उनकी उम्र बहुत ज्यादा थी इसलिए जब बूढ़ी हो गयीं तो उनको संदेह हुआ कि शायद मुहम्मद (सल्ल०) तलाक़ दे दें और सोहबत (सम्भोग) न करें, इस बिना पर उन्होंने अपनी बारी हज़रत आयशा (रजि०) को दे दी। और उन्होंने खुशी से कुबूल कर ली।

(सही बुखारी व मुस्लिम किताबुन्निकाह)

मिजाज तेज था, हज़रत आयशा उनको बेहद मानती थी परन्तु कहती थी, एक बार क़ज़ाए हाजत (लैट्रीन) के लिए जंगल जा रही थी, रास्ते में हज़रत उमर (रजि०) मिल गये, अतः हज़रत सौदा (रजि०) का कद जाहिर था उन्होंने पहचान लिया, हज़रत उमर रजि० को अज़वाज मुतहिरात का निकलना बुरा लगा और वह मुहम्मद (सल्ल०) की खिदमत में पर्दा की बात रख ही चुके थे, इसलिए बोले सौदा (रजि०) तुमको हमने पहचान लिया, हज़रत सौदा को बहुत बुरा लगा, मुहम्मद (सल्ल०) के पास पहूंची और हज़रत उमर (रजि०) की शिकायत की, इसी किस्सा के बाद आयते हिजाब (पर्दा की आयत) नाज़िल हुई।

(सही बुखारी भाग १ पेज २६)

मज़ाकिया इस कदर थी कि कभी–कभी इस अन्दाज़ से चलती थी कि आप हंस पड़ते थे, एक बार कहने लगीं कि कल रात को मैंने आप के साथ नमाज़ पढ़ी थी, आप ने इस कदर (देर तक) रूकूअ़ किया कि मुझ को नकसीर फुटने का शुब्हा हो गया, इसलिये मैं देर तक नाक पकड़े रही आप (सल्ल०) इस शब्द को सुनकर मुस्कुरा उठे। (इब्ने सअद भाग ८ पेज ३७)

दज्जाल से बहुत डरती थीं, एक बार हज़रत आयेशा (रजि०) और हफ्सा (रजि०) के साथ आ रही थीं, दोनों ने मजाक में कहा तुम ने कुछ सुना? बोली क्या? द्रज्जाल निकल आया है हज़रत सौदा (रजि०) यह सुनकर घबरा गई, एक खेमा जिसमें कुछ आदमी आग सुलगा रहे थे, पास में था जल्दी से उसके अन्दर घुस गयीं, हज़रत आयशा (रजि०) और हफ्सा (रजि०) हंसती हुई मुहम्मद (सल्ल०) के पास पहुंची और आप को इस मजाक की खबर की आप तश्रीफ लाए और खेमा के दरवाजे पर खड़े होकर फरमाया कि अभी दज्जाल नहीं निकला है यह सुन कर हज़रत सौदा (रजि०) बाहर आयी तो मकड़ी का जाला शरीर में लगा हुआ था उसको बाहर आकर साफ किया। (इसाबा भाग ८ पेज ६५)

मंजूम दुआ

अमतुल्लाह तस्नीम

नोट : मर्द पढ़ें तो जहां मुअन्नस (स्त्री लिंग) का सीग़ा है उसे मुज़क्कर (पुलिंग) कर लें।

आज फिर आई हूं मैं ऐ शाह तेरे रूबरू
सदक़ा अपने रहम का रख ले तू मेरी आबू
कर अ़ता ऐसी ख़ुशी शुहरत हो जिस की सूबसू
अब तेरे दरबार से यारब फिरूं मैं सुर्ख़ रू
मांग कर तुझ से मुझे ख़ाली न फिरना चाहिए
निअ़मतों से दामने मक़्सूद भरना चाहिए

सुब्ह से ले शाम तक रहता है मुझ को इंतिज़ार
देखें आती है किधर से रहमते परवर दिगार
आरज़ूए दिल यही है ऐ मेरे आली तबार
पै ब पै नाज़िल हों तेरी रहमतें टूटे न तार
मांग कर तुझ से मुझे ख़ाली न फिरना चाहिए
निअ़मतों से दामने मक़्सूद भरना चाहिए।

मांग कर तुझ से जहां में कोई कब ख़ाली फिरा
रात दिन दरबार में रहता है मेला सा लगा
मुद्दआ़ लेकर जो आया शाद हो कर वह गया
फ़ज़्ल से अपने मुझे भी शाद कर रब्बुल उ़ला
मांग कर तुझ से मुझे ख़ाली न फिरना चाहिए
निअ़मतों से दामने मक़्सूद भरना चाहिए

इन्तिहा तक्लीफ़ की अब हो चुकी है कर मदद
सब्र की ताक़त नही दिल में मरे रब्बे अहद
और दुआ करते हुए गुज़री है मुद्दत ऐ समद
ख़त्म कब होगी ये तक्लीफ़ें, है इनकी कोई हद
मांग कर तुझ से मुझे ख़ाली न फिरना चाहिए
निअ़मतों से दामने मक़्सूद भरना चाहिए

हाथ उठा तस्नीम अब अपने ख़ुदा के सामने
सर झुका अपना अदब से किब्रिया के सामने
गुज़री जो तुझ पर वो कह रब्बुल उ़ला के सामने
आजिज़ी से कह जो कहना है ख़ुदा के सामने
मांग कर तुझ से मुझे ख़ाली न फ़िरना चाहिए
निअ़मतों से दामने मक़्सूद भरना चाहिए

हाले दिल सब कह के कहना ऐ ख़ुदाए ज़ुलूजलाल
जिस घड़ी जिसका उठा दस्ते दुआ बहरे सुवाल
कर दिया फ़ौरन उसे निअ़मत से अपनी माला माल
फ़ज़्ल से अपने मेरा भी दूर कर रंजो मलाल
मांग कर तुझ से मुझे ख़ाली न फिरना चाहिए
निअ़मतों से दामने मक़्सूद भरना चाहिए

फिरऔन की बीवी और उसकी बेटी की दासी

मास्टर लतीफ अहमद एम०ए०

फिरऔन मिश्र का बादशाह था जिसने खुदाई का दावा किया था। हजरत आसिया उसकी बीवी थीं। खुदा की कुदरत पति शैतान और बीवी ऐसी वली जिसकी प्रशंसा कुरआन में आयी है और जिनकी बुजुर्गी पैगम्बर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस तरह फरमाई कि मर्दों में बहुत कामिल हुए हैं मगर औरतों में कोई कमाल के रूतबे को नहीं पहुंची सिवा हजरत मर्यम और आसिया (रज़ि०) के। (यह फजीलत पिछली उम्मतों में है इस उम्मत में कई औरतें कामिल हुई हैं।) इन्होंने मूसा (अ०) को बचपन में जालिम फिरऔन से बचाया था। इनकी किसमत में मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान लाना लिखा था। बचपन ही से उनके दिल में उनकी महब्बत पैदा हो गयी थी। जब मूसा अलैहिस्सलाम को पैगम्बारी मिली फिरऔन तो ईमान नहीं लाया मगर यह ईमान ले आयीं। फिरऔन को जब इनके ईमान लाने की खबर हुई तो उन पर बड़ी सख्ती की और तरह तरह से तकलीफ पहुंचायी उनके हाथों और पैरों पर मेखें जड़वा दीं उनके गिर्द आग जलवा दी कैसी तकलीफ़ बर्दाश्त की मगर उन्होंने अपना ईमान नही छोड़ा इसी हालत में दुन्या से उठ गयीं। आखिर वक्त दुआ की थी 'ऐ अल्लाह अपने खास करम से मेरे लिए जन्नत में मकान बना दे और फिरऔन के बुरे अअमाल और उसके मजालिम से मुझे नजात दे। हजरत आसिाय की दुआ कुबूल हुई उनको जन्नत वाला मकान मरने से पहले दिखा दिया गया।

रौज़तुस्सफा एक किताब है। इसमें लिखा है कि फिरऔन की बेटी की एक दासी थी जो उस के कामों की जिम्मेदार थी और उसकी कंधी चोटी भी वही करती थी। वह हजरत मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान रखती थी मगर फिरऔन के भय से जाहिर न करती थी। एक बार उसके बाल संवार रही थी कि उसके हाथ से कंघी छूट गयी असने बिस्मिल्लाह कह कर उठाली। लड़की ने पूछा, यह तूने क्या कहा यह किसका नाम है। दासी ने कहा, यह उसी का नाम है जिसने तेरे बाप को पैदा किया और उसको बादशाही दी। लड़की को बड़ा आश्चर्य हुआ कि मेरे बाप से भी कोई बड़ा है दौड़ी हुई फिरऔन के पास गयी और सारा किस्सा बयान किया। फिरऔन अत्यन्त क्रोध में आया और उस दासी को बुलाकर डराया धमकाया मगर उसने स्पष्ट कह दिया कि जो चाहे सो कर ले, मैं ईमान न छोडूंगी। अव्वल उसे उस के हाथ पांव में कीलें जड़वाकर उस पर अंगारे और भूबुल डाली मालूम होता है कि जो उस की खुदाई का इन्कार करता उसको इसी तरह की सजा देता था। जब इस से भी कुछ न हुआ तो उसकी गोद में एक लड़का था उसको आग में डाल दिया। लड़का आग में बोला अम्मा धैर्य रखिये खबरदार ईमान न छोड़िये गरज वह अपने ईमान पर जमी रही यहां तक कि उस बेचारी को भी पकड़ कर जलते तन्नूर में झोंक दिया गया।

बच्चों की तालीम

डा० शबाना नजीर

अब तो यह बात स्पष्ट हो गई है कि पढ़ाई जिन्दगी के लिए बहुत जरूरी है तो इसके लिए यह भी जरूरी है कि हमें बच्चों की पढ़ाई पर मन चाहा ध्यान देना चाहिए और आज के माता पिता इस तरफ ध्यान दे भी रहे हैं। उन्हें इस बात की चिन्ता रहती है कि उनके बच्चे अच्छी से अच्छी तालीम हासिल कर सकें। वह इन के दाखिले के लिए बड़ी रकम अदा करते हैं। और उनके लिए ट्यूशन लगाते हैं अर्थात अपनी तरफ से पूरी कोशिश करते हैं लेकिन इस युग में भी जिन के बच्चों में पढ़ने का शौक नहीं तो वह मां बाप बड़े परेशान हो जाते हैं। उन्हें अपने बच्चों का भविश्य उज्जवल नजर नहीं आता और अगर ऐसे में कोई उनसे कह दे कि बहुत आसान हैं बच्चों को पढ़ाई की तरफ रागिब करना तो उनकी खुशी का ठिकाना ही नहीं होता।

वास्तव में बच्चों का पालनपोषण एक बड़ा ही नाजुक मसला है और इसमें जरा सी कहीं गलती हुई नहीं कि असर बहुत दूर तक जाता है।

बहुदा यह देखा गया है कि माता पिता अपने बच्चों की तालीम के बारे में बड़ा सख्त रवैया रखते हैं। बचपन से ही उस पर पढ़ाई का बोझ डाल दिया जाता है नतीजा यह होता है कि बच्चा पढ़ाई को एक बोझ समझने लगता है। होना यह चाहिए कि हम बच्चों में पढ़ाई के लिए दिलचस्पी पैदा करें। उन में शौक हो कि हम भी पढ़ेंगे। अक्सर यह देखने में आया है कि बच्चे स्कूल जाने से बहुत पहले से ही इस बात की जिद करने लगते हैं कि हमारा बैग भी लाइए, हम भी स्कूल जाएंगे और फिर अचानक कुछ ऐसा होता है कि यही बच्चे पढ़ाई की तरफ से बददिल हो जाते हैं और स्कूल तक जाने को राजी नहीं होते। यह वह मोड़ है जब मां बाप या घर के दूसरे लोगों को बड़ी सूझ बूझ से काम लेना चाहिए क्योंकि अगर इस मोड़ पर बच्चों को संभाला नहीं गया तो फिर मामला बिगड़ सकता है।

यह भी हो सकता है कि उसके जेहन में स्कूल की गलत कल्पना समा गई हो। ऐसे बच्चों को जबरदस्ती स्कूल में दाखिल करा देना मुनासिब नहीं होगा क्योंकि इस जबरदस्ती का प्रभाव यह हो सकता है कि बच्चा स्कूल से भागना शुरू कर दे और अगर बच्चे के साथ घर पर भी जबरदस्ती की गई तो हो सकता है कि वह घर से भाग कर आवारा गर्दी पर मजूबर हो जाए।

बच्चो की मनोस्थिति (नफसियात) के विशेषज्ञ प्याजे का कहना है कि बच्चों की तालीम के सिलसिले में खेल से बढ़कर और कोई अमल मददगार साबित नही हो सकता। खेल केवल मौजमस्ती और मनोरंजन (तफरीह) का ही जरिया नही है बल्कि अगर उन्हें उचित ढंग से पलान किया जाए तो बच्चे की तमाम तर योग्यताओं को विकास किया जा सकता है।

स्कूल का टाईमटेबुल रूखा सूखा न हो बल्कि विभिनन सरगर्मियों (कार्यक्रम) का इम्तिमाज होना बेहद जरूरी है। संगीत कला, चित्र कला, गाईड स्काउट यह तमाम कार्यक्रम बच्चों में दिलचस्पी पैदा करता है।

फ्रोबेल और मॉनटेसर दो शिक्षा विशेषज्ञ गुजरे हैं और उन दोनों ने ही खेलों पर बहुत जोर दिया है। उनके अनुसार खेल केवल सैर तफरीह (मनोरंजन) का जरिया नहीं है बल्कि एक गम्भीर महत्वपूर्ण अमल है। इस तरह बच्चा जेहानत के हिसाब से भी बेहतर हो जाता है। इन दोनों माहेरीन का यही दृष्टिकोण है कि खेल के द्वारा बच्चों को पढ़ाना ही बेहतरीन अमल है इससे बच्चे की दिलचस्पी भी बरकरार रहती है और उसका जेहनी विकास भी हो जाता है।

बच्चा बहुदा गलत साथ में पड़ जाने के कारण भी पढ़ाई की तरफ से गाफिल हो जाता है। अतः यह जरूरी है कि बच्चों के दोस्तों पर नजर रखी जाए।

ऐसा न हो कि बच्चों पर हर समय पढ़ाई करने के लिए डांट पड़ती रहे बल्कि एक व्यवस्थित तरीके पर काम करने की जरूरत है। बच्चों का काफी समय टीवी देखने में गुजरता है। वास्तव में टेलीविजन जिन्दगी का एक अटूट हिस्सा बन चुका है तो यह सोच लेना कि हम बच्चे को टीवी नहीं देखने देंगे कोई हल नहीं है। टीवी के प्रोग्राम चुन लीजिए और सब को मिल कर इन प्रोग्रामों से लुत्फ उठाना चाहिए। यह तरीका गलत है कि बच्चे को दूसरे

कमरे में पढ़ने के लिए भेज दिया जाए और बाकी लोग बैठे टीवी देखते रहें और हंसी मजाक करते रहें। यह बात समझ लेनी चाहिए कि बच्चे की मुनासिब तर्बीयत के लिए माता पिता को और मुख्यतः मां को बहुत सी कुर्बानियां देनी पड़ती हैं तब ही तो कहा गया है।

मनोरंजन का प्रोग्राम, शादी विवाह और दावत का प्रोग्राम सब बच्चों की पढ़ाई को सामने रखकर बनाना चाहिए। बच्चे की सफलता पर उसको सराहना करनी चाहिए, उसे प्यार करें कुछ इनाम भी दें और उसके जो कमजोर पहलू हैं उनकी अधिक निन्दा न करें न ही हर समय नम्बर आने या फेल होने का ताना दिया जाए बल्कि बच्चे की हिम्मत बढ़ाना चाहिए और साथ ही साथ उसको यह एहसास दिलाना चाहिए कि पढ़ना जरूरी है। इस बार सफल नहीं हो सके तो कोई बात नहीं अगली बार सही।

अपनी जरूरतों को कुछ समय के लिए टाल कर बच्चे की तालीमी जरूरतों को पूरा करें तो यह देखेंगे कि बड़ी आसानी से बच्चों को पढ़ाई की तरफ रागिब (आकर्षित) किया जा सकता है, घर में इल्मी माहौल बनाए रखें। खुद भी कुछ ध्यान करें और बच्चे को पाठ पुस्तकों के अतिरिक्त भी कुछ दिलचस्प चीजें पढ़ने के लिए दें।

बच्चों की तालीम के साथ उन की तर्बियत की फिक्र ज़रूरी है। बच्चों को मां बाप का अदब उस्ताद का अदब हर बड़े का अदब सिखाएं।

बच्चों की नश्व नमा में फल

इदारा

फल कुदरत (प्रकृति) की ऐसी देन है जिस में सिहत व शिफा (स्वास्थ्य तथा नीरोगता) के तमाम अनासिर (तत्व) मौजूद हैं यह बच्चों और बड़ों दोनों के लिए फाइदेमंद हैं, इसलिए कि फलों में मौजूद विटामिन्स, प्रोटीन और फोरी तवानाई (तुरंत शक्ति) सिहत को मजबूत करते हैं। जिन बच्चों को रोजाना ताज़ा फल दिये जाते हैं वह उन बच्चों से जो फल नहीं खाते, जियादा फुर्तीले होश्यार और जिन्दगी में काम्याब (सफल) होते है। माहिरीन (विशेषज्ञों) बच्चों को फल खिलाने के कई नए सबब बताए है। जिन की जानकारी जरूरी है। फलों में ऐसे अनासिर (तत्व) होते है जो बच्चों में बीमारियां से मुकाबला करने और बीमारी से बचाए रखने की ताकत पैदा करते हैं। गाजर का निचोड़ (जूस) बच्चों की बेहतर बीनाई (नेत्रज्योति) के लिए बहुत जरूरी है।

ताजा फल और जूस बच्चों का आई क्यू लेविल बढ़ाने में मददगार साबित होते हैं। फल ऐसे टेस्टी होते हैं कि बच्चे खुशी से खा लेतें हैं। अगर बच्चों को रोजाना दो तीन फल खिलाए जाए तो बच्चा चुस्ती के साथ स्कूल जाएगा और उस के इम्तिहान का नतीजा भी अच्छा होगा। फल हर हाल में फाइदेमन्द ही रहते हैं। बच्चों को मुम्किन हो तो दिन में तीन बार फल दें, बच्चों को फल देने से पहले उन को धोकर साफ कर लेना चाहिए। कभी फलों पर कोई केमीकल लगा होता है जिससे बच्चे को नुक्सान पहुंच सकता है।

चाहिए कि बच्चों को घर में निकाला हुआ ताजा जूस दिया जाए। यह डिब्बों का जूस अपनी ताजगी और इफादीयत खो चुका होता है। उस जूस में सिर्फ मजा (स्वाद) रहता है फाइदा नहीं। फल काट कर पानी में डाल दिया और दो घंटों के बाद उसे निकाला यह भी ठीक नहीं, जूस निकाल कर फ्रिज़ में रख दिया यह भी ठीक नहीं इस लिये कि ताजगी खत्म हो जाती है।

आम का ताजा रस और दूध का आमेज़ा (मिश्रण) भी बच्चों की बढ़ोत्तरी में बहुत मुफीद (लाभदायक) है। बच्चों की बढ़ोत्तरी और मजबूती में केला भी बहुत फाइदेमन्द है। माहिरीन का कहना है कि केला अकेला अपने बराबर के ६ फलों की तवानाई (शक्ति) जिस्म में पैदा करता है। एक साल से लेकर पांच साल तक के बच्चों के लिए केला बहुत मुफीद ग़िज़ा (लाभदायक आहार) है। केले में बिटामिन बी २, ए बी सी और सी २ के साथ फाइर पोटाशियम और मेगनोश्यम छोटी उम्र की ग़िजाई ज़रूरत को पूरा करने में मददगार साबित होते हैं। सेब हमेशा नर्म और मीठा लेना चाहिए, अगर एक अच्छा सेब रोजाना खाया जाए तो डाक्टर के पास जाने की जरूरत न रहे। अंग्रेजी मसल (कहावत) है:

वन एपिल ए डे
कीप्स डाक्टर अवे

फलों में मौजूद मुफीद अनासिर (तत्व) बच्चों की हड्डियों को मजबूत बनाते हैं।

दारूलउलूम नदवतुल उलमा, लखनऊ

का शिक्षा में योगदान

हैदर अली नदवी

भारतीय संविधान विश्व का सबसे बड़ा संविधान है यह लिखित रूप में है, इसमें अधिकारों तथा कर्तव्यों का विस्तार पूर्वक वर्णन है, जिसमें मूल अधिकारों का विशेष महत्व है संविधान की एक धारा के अन्तर्गत प्रत्येक धार्मिक समुदाय को अपने पसंद की शिक्षण संस्था संचालित करने का अधिकार प्राप्त है (बशर्ते कि संविधान का उल्लंघन न हो) इसी अधिकार के तहत अल्पसंख्यक समुदाय "मुस्लिमों" की भी प्राइमरी से लेकर उच्च शिक्षा तक अनेक शिक्षण संस्थाएं चल रही है "दारूल उलूम नदवतुल उलमा" भी उनमें से एक प्रमुख संस्था है जहां प्राइमरी से लेकर डिग्री तक शिक्षा दी जाती है जहां धार्मिक शिक्षा दीक्षा के साथ साथ आधुनिक शिक्षा, अंग्रेजी, हिन्दी, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र, इतिहास, दर्शनशास्त्र, राजनीति शास्त्र, इत्यादि की आवश्यक शिक्षा भी दी जाती है, इसलिए नदवा द्वारा दी गयी डिग्री "आलिमीयत" को इण्टर मीडिएट के समकक्ष मानते हुए लखनऊ यूनीवर्सिटी सहित देश की अनेक प्रमुख यूनिवर्सिटियों ने अपने यहां बी.ए. प्रथम वर्ष में प्रवेश के लिए शुद्ध माना है नदवा के छात्र स्नातक तथा परस्नातक तथा पी. एच. डी. करने के पश्चात अनेक शासकीय एवं राजकीय सेवाओं में कार्यरत है तथा विदेशों में भी उच्च पदों पर कार्य कर के देश का गौरव बढ़ा रहे है। देश के अनेक विद्यालयों, विश्वविद्यालयों में टीचर, प्रोफेसर, रीडर, तथा विभागाध्यक्ष जैसे उच्च पदों पर आसीन हैं। अखिल भारतीय मानवता, फोर्म के मंच के जरिए मानवता का संदेश भी इस संस्था से संचालित किया जाता है भाषा विभाग द्वारा प्रमुख भाषाओं का ज्ञान कराया जाता है, यहां की शिक्षा का माध्यम उर्दू है अरबी यहां की प्रमुख भाषा है, प्रकाशन विभाग द्वारा हिन्दी उर्दू अरबी तथा अंग्रेजी में अनेक विषयों की पुस्तकों का प्रकाशन किया जाता है नदवा का अपना एक बहुत बड़ा पुस्तकालय है जिसमें हर विषय पर पुस्तकें उपलब्ध हैं।

यहां से हिन्दी, उर्दू, अरबी, तथा अंग्रेजी में मसिक तथा अर्द्धमासिक प्रत्रिकाएं प्रकाशित होकर देश विदेश में शिक्षा दीक्षा का प्रचार–प्रसार किया जाता है। इस प्रकार अशिक्षा के अभिशाप को दूर करने में नदवतुल उलमा महान योगदान कर रहा है देश की प्रमुख शिक्षण संस्थाओं में नदवा का प्रमुख स्थान है, राज्य में हज हाउस न होने से राज्य सरकार के अनुरोध पर नदवा के जिम्मेदारों ने हाजियों की सेवा के लिए अपने परिसर का एक बड़ा भाग कई वर्षों से राज्य सरकार को हज के समय प्रयोग हेतु देता है, इस प्रकार नदवा सरकार तथा जनता की सेवा कर रहा है शिक्षा के प्रचार–प्रसार से लेकर जनता की सेवा के योगदान की सराहना की जानी चाहिए और उसकी क़द्र करना चाहिए। और आम जनता में नदवे का परिचय कराना चाहिए।

दारूल उलूम नदवतुल उलमा की अनेक शाखाएं प्राइमरी से लेकर हायर सेकेन्ड्री तक देश के अनेक भागों में फैली हुई हैं सैकड़ों की संख्या में छात्र प्रति वर्ष यहां से डिग्री प्राप्त कर के देश की अनेक यूनिवर्सिटियों में उच्च शिक्षा प्राप्त करते हैं तो सैकड़ों शिक्षण द्वारा दीन की सेवा करते है। कोई तब्लीगी जमाअत से जुड़ता जाता है तो कोई जमाअते इस्लामी से। गरज़ कि नदवे की खिदमत हर मैदान में है।

यह अहले वफ़ा का मरकज़ है
यह अहले सफ़ा का मख़ज़न है
शहबाज़ यहां पर पलते है।
यह लाल व गुहर का मादन है
हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत है
हम से है दरखशां सुब्हे वतन
हम ताबिशे दीं हम नूरे यकीं
हम हुस्ने अमल हम खुल्के हसन
या नूर की बारिश होती है
या इल्म का बहता है धारा
हर कतरा यहां का मोती है
हर जर्रा यहां का मह पारा
हम नाज़िशे मुल्को मिल्लत है
हम से है दरखशां सुब्हे वतन
हम ताबिशे दीं हम नूरे यकीं
हम हुस्ने अमल हम खुल्के हसन

हिदायत अल्लाह के इख़्तियार में है

गुफरान नदवी

बाज़ इस्लाम दुशमन ताकतें बराबर, इस कोशिश में लगी रहती है, कि मुसलमानों में इन्तिशार (अस्त व्यस्तता) और तफ़रका फैले और मुसलमान आपस में दस्तोगरेबाँ (हाथापाई) हो, यह सब ऐसे ही लोगों की हरकतें हैं कि कोई औरत खड़ी होकर कहती है कि इस्लाम में औरतों का मर्दों के बराबर दर्जा न देकर बड़ा जुल्म किया गया तो कहीं कोई बड़ी रोशन ख़याल और तरक्की पसन्द औरत कहती है यह परदा वगैरह सब बेकार है इस का इस्लाम से कोई तअल्लुक नहीं, तो कोई औरत कहती है कि आख़िर औरत वह सब काम क्यों नहीं कर सकती जो कि मर्द करते हैं? बड़े रोशन ख़याल, वसीउन्नज़र (दूरदर्शी) और तरक्की पसन्द लोग कहते है कि इस्लाम में इन्किलाबी तब्दीलियों (क्रान्तकारी परिवर्तन) की जरूरत है आज से सैकड़ों साल पहले जो काइदे क़ानून बनाए गए वह आज कैसे दुरूस्त (उचित) हो सकते हैं? लेकिन यह सब खुली हुई गुमराही है, बदअक़ली है ईमान से गफ़लत है और उसकी मुख़ालिफ़त है बहुत साफ तौर पर कह दिया गया कि रसूले अकरम (स०अ०) के जरये पहुंचाये गए पैग़ामात और हिदायत के जरये दीन को मुकम्मल कर दिया गया हैं, अब क़ियामत तक इसमें किसी तब्दीली (परिवर्तन) की जरूरत नहीं है, जिसे तब्दीली की जरूरत महसूस हो वह तौबा करे ईमान को समझे, खुदा से नेक हिदायत की दुआ करे, उसे कभी कहीं कोई कमी नहीं नजर आएगी कभी किसी तब्दीली की जरूरत नहीं महसूस, होगी, वह चाहे विरासत का, शादी और तलाक़ का, हुकूक़ और इख्तियारात का मसअला हो, कियादत और इमामत की बात, लियाक़त और इबादत से मुतअल्लिक कोई मौजुऊ (विषय) हो, हर हर बात, हर हर मसअले का वाज़ेह हल (स्पष्ट समाधान) इस्लाम में मौजूद है जो कह दिया जो बता दिया गया। वह सच है हक़ है।

इस्लाम में जब्र की कोई गुन्जाइश नहीं, इस्लाम एक मज़हब है, एक मुहज्जब तरीक–ए–हयात (सभ्य जीवन पद्धति) बताता है, दीन और दुन्या दोनों को सवारने की तरकीबें बताता है राहें हमवार करता है, न किसी को धमका कर मुसलमान बनाया जा सकता है और न मुसलमान बनाकर रखा जा सकता है और इसी तरह किसी भी किस्म के लालच से भी किसी को मुसलमान नहीं बनाया जा सकता या जो मुसलमान होते हुए गुमराह हो मजहबी उसोलों और ज़ाबतों की खिलाफ़ वर्ज़ी करे उनको नामुमकिन बताए उसे भी डरा धमका या लालच देकर अच्छे मुसलमानों की तरह अमल करने के लिए तैयार नहीं किया जा सकता, क्योंकि कि जो होश व हवास बरकरार रखते हुए इस्लाम को समझे और फिर उसको अपने लिए मुफ़ीद समझे, यह यकीन करे कि इस्लाम को अपनाकर ही दीन व दुन्या की नेमतें (मेहरबानी) और तमाम आराम और सुकून हासिल किया जा सकता है वही मुसलमान है लेकिन जिसको इस्लाम में इस्लाह (सुधार) की ज़रूरत महसूस होती है। किसी के साथ नाइनसाफी और जियादती होती दिखाई दे वह लाख मुसलमान बने वह मुसलमान नहीं हो सकता, बहुत वाज़ेह तौर (स्पष्ट रूप) से कह दिया गया कि इस्लाम जैसा है, जो हिदायतें (निर्देश) देता है उनको पूरी तरह तसलीम करना है (मानना है) अमल करना है तो मुसलमान हो, वरना जो चाहे कहो, तुम्हारा शुमार मुसलमानों में न होगा, तुम्हारा हश्र (परिणाम) भी मुसलमानों जैसा न होगा, और तुम्हारे लिए आख़िरत में कोई इन्आम नहीं अब जिसको मुसलमान बनकर जीना व मरना है उसपर लाजिम (ज़रूरी) है कि वह इस्लाम को उसके तमाम उसूल और जाब्तों के मुताबिक अपनाए लेकिन जिसको नित नई बातें कहकर शुहरत हासिल करना हो वह अपनी जैसी करके देख ले उसे चाहे जितनी शुहरत मिले इस्लाम दुशमनों से कितनी ही मदद मिले उसे बहरहाल जलील खुवार (बेइज्जत) होना है और उसका हशर (परिणाम) इस्लाम के मुखालिफों (विरोधियों) और मुस्लिम दुश्मनों जैसा ही होगा।

"ऐ अल्लाह हमे सच को सच के रूप में दिखा और उसका इत्तिबाअ (अनुकरण) नसीब फरमा, और बातिल (मिथ्या) को बातिल (मिथ्या) के रूप में दिखा और उससे हमें दूर रख।"

पृथ्वी की बनावट

हबीबुल्लाह आज़मी

पृथ्वी की संरचना– पृथ्वी का अन्दरूनी भाग बहुत गरम है। पृथ्वी का ऊपरी भाग ठोस पपड़ी के रूप में है। इसका धरातल ऊँचा–नीचा है। बड़े बड़े गढ्डों में पानी भरा है जिन्हें हम समुद्र कहते हैं। पानी भरे हुए भाग को जल मण्डल भी कहते है। शेष सूखा भाग 'स्थल मण्डल' कहलाता है। जल मण्डल और स्थल मण्डल को चारों और से वायु मण्डल घेरे हुए है और उसके बाहर आकाश या अन्तरिक्ष है, जो अनन्त है।

चट्टानें- भूगोल की भाषा चट्टान केवल पत्थर को ही नहीं बालू मिट्टी कीचड़, कंकड़, कोयला, धातु आदि उन सभी पदार्थ को कहते हैं जिनसे भूपटल या पृथ्वी की पपड़ी की रचना हुई है। चट्टाने तीन प्रकार की होती है–

अग्नेय शैल **(Igneous Rock)**– यह चट्टान पृथ्वी के भीतर से निकले हुए लावा जैसे गरम पदार्थ के ठण्डा होकर जम जाने से बनती है। इनमें खनिज पदार्थ के कण एक दूसरे से मिले रहते है। ग्रेनाइट, बेसाल्ट पत्थर, बिल्लौर आदि इसके उदाहरण हैं।

पर्तदार चट्टान- ये पानी और हवा के कार्य से बनी चट्टानें तहों के रूप में मिलती है। मिट्टी, खड़िया, बालु, पत्थर, चूने को पत्थर आदि इनके उदाहरण हैं। आग्नेय चट्टान को वर्षा और नदियों को पानी तोड़–फोड़ कर और बारीक करके अपने साथ ले जाकर समुद्रों और झीलों की तह पर इकट्ठा कर देता है और यह पदार्थ तलछट की चट्टान के रूप में जमा हो जाता है।

परिवर्तित चट्टान **(Metamorphic rock)**– गर्मी और दाब के कारण आग्नेय और परतदार चट्टाने परिवर्तित होती रहती है और चट्टान देखने में नई जान पड़ती है। इन्हें ही परिवर्तित चट्टान कहते हैं। कोयला ग्रेफाइट (पैंसिल के सुर्मे) में बदल जाता है। चिकनी मिट्टी स्लेट पत्थर में बदल जाती है, चूने में संगमरमर बन जाता है। समुद्र के जन्तुओं के हाड–पंजर समय पाकर खड़िया और चूने में पत्थर के परिवर्तित हो जाते है। इन्हें कार्बनी चट्टाने भी कहते हैं।

पर्वतों के प्रकार

१. मोड़दार पर्वत– **(Fold Mountains)**– इनका निर्माण तलहटी चट्टानों पर जब दो तरफ से दबाव तो तलहटी चट्टानों में मोड़ पड़ने लगते है। हिमालय की श्रेणियां इसी तरह बनी हैं।

२. तोदे के पहाड़– पृथ्वी की भीतर हलचल के कारण पपड़ी में पड़ी किन्हीं दो समान्तर दरार के बीच का भाग ऊपर उठ जाने से पहाड़ बन जाता है यदि दो समान्तर दरारों के बीच का भाग नीचे धंस जाये तो उससे दरार–घाटी बन जाती है।

३. ज्वालामुखी पर्वत– कई बार पृथ्वी की पपड़ी के नीचे का

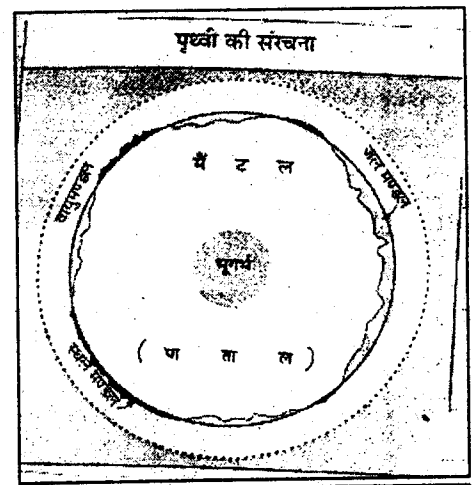

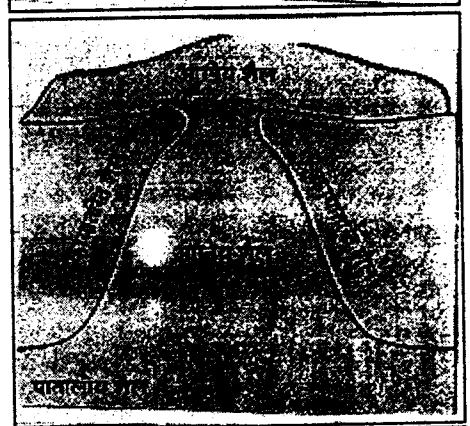

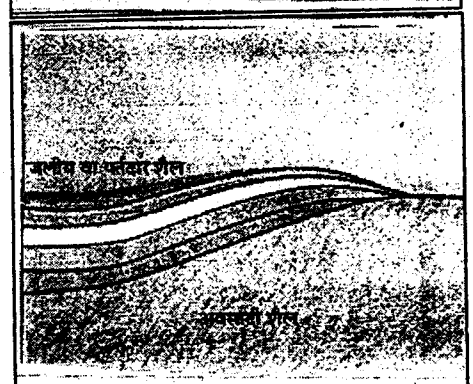

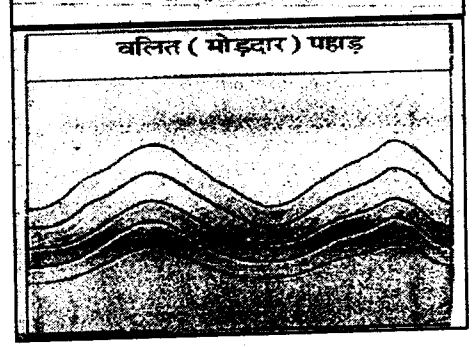

गरम–लावा और ऊपर से रिस कर आये हुए पानी की भाप धरती की ऊपरी सतह को फोड़ कर बड़े वेग से बाहर फूट निकलती है। यह लावा छिद्र के इर्द–गिर्द एकत्रित होकर रहता है, और कुछ समय में शंकु के आकार का पहाड़ बन जाता है। इसके मुंह से गरम लावा और धुआं आदि निकलता रहता है, इसीलिए इसे ज्वालामुखी पर्वत कहते हैं।

भूकम्प- कई बार अचानक भूमि के अन्दर गड़गड़ाहट होती है और धरती हिल उठती है। इसे भूकम्प या भूचाल कहते हैं। भूकम्प ज्वालामुखी क्षेत्रों में या जहां पृथ्वी की पपड़ी कमजोर हो, वहां अधिक आते है। उनके मुख्य कारण पृथ्वी के भीतरी भाग को ठण्डा होने के कारण सिकुड़ना, दरारें पड़ जाने से चट्टानों का ऊपर–नीचे खिसकना चट्टानों का मोड़ खाना, बाहरी शक्तियों (जल, सूर्य, वायु आदि) से टूट–फूट कर पर्वतों का संतुलन स्थापित रखने की कोशिश में ऊँचे उभरना या अन्दर रिसे पानी के भीतरी भाग से भाप बनकर ज्वालामुखी क्रिया आदि हैं।

पृथ्वी पर भूकम्प की पट्टियाँ– १. प्रशान्त महासागर के चारों ओर २. पश्चिमी द्वीप समूह से भूमध्य सागर ईरान बलोचिस्तान, उत्तरी भारत होती हुई इण्डोनेशिया तक।

भूचाल से हानियाँ– बस्तियों का विनाश, समुद्री तूफान से जहाजों की तबाही, भूमि का धंस जाना और नदियों द्वारा तबाही आदि।

भूचाल से लाभ– खनिज पदार्थ का सुलभ हो जाना समुद्र तट के धंस जाने से बन्दरगाह बन जाना चट्टानों की टूट–फूट से नई उपज मिट्टी बनना अन्दर से लावा निकल कर ठण्डा होने पर नए क्षेत्र बन जाना आदि। ●●●

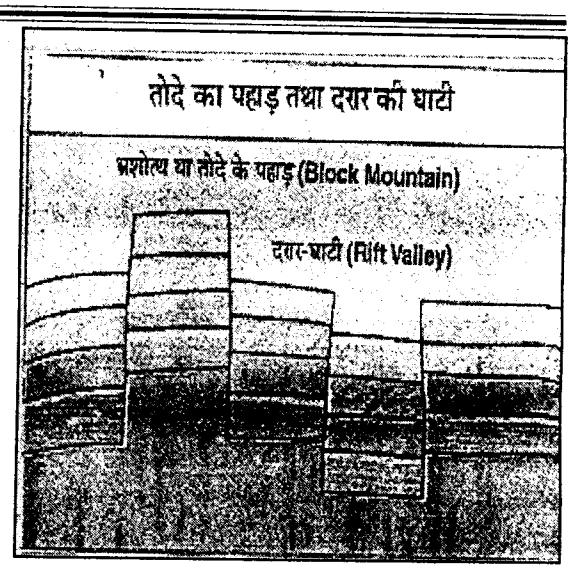

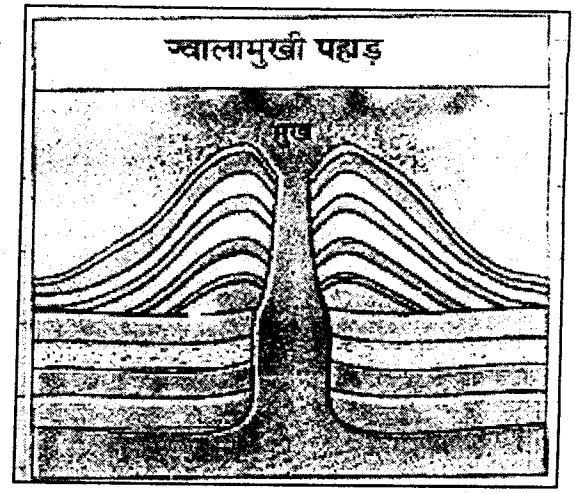

वश्शम्सु तजरी लि मुस्तक़र्रिल्लहा (पवित्र क़ुर्आन ३६:३८)

(और सूरज अपने ठिकाने की ओर चला जा रहा है)

यह सूर–ए–यासीन की एक आयत का आधा भाग है। पूरी आयत का तर्जुमा (अनुवाद) इस प्रकार है : और सूरज अपने ठिकाने की ओर चला जा रहा है, यह प्रभुत्व प्राप्त सर्वज्ञानी (अ़ज़ीज़ व अ़लीम) का बान्धा हुआ हिसाब है।

आज कल साइन्स व जुग़राफ़िया वालों की यह तह़क़ीक़ है कि यह गोल ज़मीन अपनी धुरी पर लट्टू की तरह़ नाचती है इस तरह़ जो आधा हिस्सा सूरज के सामने रहता है उसमें दिन और जो हिस्सा आड़ में रहता है उस में रात रहती है। हमारे कुछ आ़लिमों का कहना है कि पवित्र क़ुर्आन ने सूरज का चलना बताया है इसलिए साइन्स और जुग़राफ़िया वालों की यह बात ग़लत है उसको हरगिज न मानना चाहिए। यह सुनकर साइन्स व जुग़राफ़िया वाले आ़लिमों का मज़ाक़ उड़ाते हैं, अगर्चि उनका इ़ल्म यक़ीनी नहीं है उनकी तह़क़ीक़ आए दिन बदलती रहती है फिर भी हम को आयत का ऐसा मतलब बयान करना चाहिए जो क़ुर्आन के ख़िलाफ़ भी न हो और उनको हंसने का अवसर भी न मिले। साइन्स दां यह भी मानते हैं कि पूरा निज़ामे शम्सी (सूर्य मण्डल) एक आरे चल रहा है लिहाज़ा इसी चाल को हम सूरज का चलना मान लें और यह न कहें कि सूरज ज़मीन के गिर्द २४ घन्टों में एक चक्कर लगाता है जिससे दिन रात बनते हैं और यह मानने में कोई हरज न समझें कि ज़मीन के अपनी धुरी पर घूमने से दिन रात बनते हैं।

किस्त दो

सीरतुन्नबी

अल्लामा शिबली नोमानी

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अखलाक

मुदावमते अमल :

किसी काम को हमेशगी, स्थिरता (**CONTANCY**) के साथ अडिग होकर करना

अखलाक का सबसे पहला और जरूरी पहलू यह है कि इन्सान जिस काम को इख्तियार करे उस पर अडिग होकर ऐसा कायम रहे कि गोया वह उसकी फितरतें सानियः बन जाए। इन्सान के अलावा तमाम दुनिया की मखलुकात सिर्फ एक ही किस्म का काम कर सकती है और वह फितरतन इसी पर मजबूर है। सूरज सिर्फ रौशनी देता है उस से अन्धेरा नहीं मिल सकता, रात अन्धेरा ही फैलाती है वह रौशनी नहीं दे सकती। पेड़ अपने मौसम ही में फलते है और फूल बहार के दिनों ही में फूलते हैं। हैवानात (चौपायः) का एक एक फर्द अपनी फितरत से बाल बराबर भी नहीं हट सकता लेकिन इन्सान खुदा की तरफ से मुख्तार पैदा हुआ है, वह सूरज भी है और रात का अन्धेरा भी, उस के जौहर का पेड़ हर मौसम में फलता है और उसके अख़लाक के फूल बहार के दिनों के पाबन्द नहीं। वह हैवानात की तरह किसी एक ही खास क़िस्म के कार्य व अख़लाक (आचरण) पर मजबूर नहीं। उसको इख़्तियार दिया गया है और यही इख्तियार और उसके मुकल्लफ (सुसज्जित) और ज़िम्मेदार होने का असर है। लेकिन अख़लाक की एक दकीक़ व बारीक बात यह है कि इन्सान अपने लिए जो अख़लाके हस्नः (सद् आचरण) का जो पहलू पसन्द करे उसकी शिद्दत से पाबन्दी करे, और इस तरह हमेशगी ओर न बदलने वाले तरीक़े से उस पर अमल करे कि गोया वह अपने इख्तियार के बावजूद इस काम के करने पर मजबूर है। और लोग देखते देखते यह यकीन कर लें कि इस व्यक्ति से इस के अलावा और कोई इस तरह सरजद (घटित) हो ही नहीं सकती। मानों उस से यह कार्य इस तरह अंजाम पाते हैं, जैसे सूरज से रौशनी, पेड़ से फल और फूल से खुश्बू कि यह खासियतें उनसे किसी हालत में अलग नहीं हो सकतीं।

इसी का नाम इस्तेकामते हाल (स्थिरता) और मुदावमते अमल है।

आँहज़रत सल्ल० ने अपने तमाम कामों में इसी उसूल की पाबन्दी फरमाते थे। जिस काम को जिस तरीके से जिस वक्त आप ने शुरू फरमाया उस पर बराबर शिद्दत के साथ कायम रहते थे। सुन्नत का लफज़ हमारी शरीअ़त में इसी उसूल से पैदा हुआ है। सुन्नत का वह कर्म है जिस पर आप सल्ल० ने हमेशा मुदावमत फरमाई है। और बिना किसी ठोस कारण के कभी उसको तर्क नहीं किया। इस बिना पर जितनी सुन्नतें हैं वह असल में आप की इस्ते क़ामते (स्थिरता) हाल और मुदावमते अमल की ऐसी मिसालें हैं जिन से इन्कार नहीं किया जा सकता। आप सल्ल० के मामूलात (दिनचर्या) का जिक्र इसके पहले हो चुका है। जिससे यह मालूम हुआ कि आप के तमाम अखलाक व आमाल (आचरण व कर्म) कितने पुख्तः और मजबूत थे कि कभी तमाम उम्र उन में एक फर्क़ नहीं पैदा हुआ। एक बार एक व्यक्ति ने आप सल्ल० के इबादत व आमाल (उपासना व कर्म) के बारे में हज़रत आयशः रजि० से मालूम किया कि क्या आप किसी खास दिन यह करते थे? उन्होंने जवाब दिया, आप का अमल झड़ी होता था, यानी जिस तरह बादल की झड़ी बरसने पर आती है तो नहीं रूकती, उसी तरह आप का हाल था कि जो बात एक दफः आप ने इख्तियार कर ली हमेशा उसकी पाबन्दी की। फिर फरमाया आप सल्ल० जो कर सकते थे वह तुम में से कौन कर सकता है। (सही बुखारी) दूसरी रिवायत है कि जब आप सल्ल० कोई काम करते थे तो उस पर मुदवमत फरमाते थे।' (अबूदाउद बुखारी) इसलिए आप सल्ल० का खुद इरशाद है, "खुदा के नजदीक सबसे महबूब वह है जिस पर सबसे ज्यादा इन्सान मुदावमत करे।" (अबुदाउद बुखारी)

आप सल्ल० रातों को उठकर इबादत किया करते थे। हज़रत आयशा रजि० कहती हैं कि आप सल्ल० ने कभी रात की इबादत तर्क नहीं की। अगर कभी तबीयत नासाज़ या सुस्त हुई तो बैठकर अदा करते थे। (अबूदाउद)

जरीर रजि० बिन अब्दुल्ला एक

सहाबी हैं जिन को देखकर आप मुहब्बत से मुस्करा दिया करते थे। उनका बयान है कि कभी ऐसा न हुआ कि मैं आप की खिदमत में हाजिर हुआ हूं और आप ने मुस्करा न दिया हो। (सही मुस्लिम)

जिसक काम के करने का जो वक्त आप ने मुकर्रर कर लिया था उसे से कभी पीछे न रहे। नमाज और तस्बीह व तहलील का समय, नवाफिल की तादाद, सोने व उठने की घड़ी, हर एक से मिलने जुलने के तर्ज़ व अन्दाज में कभी फर्क़ न आया। अब वही मुसलमानों की जिन्दगी का दस्तुरूल अमल (संविधान) है।

हुस्ने खुल्क (सुशीलता)

हज़रत अली रजि, हज़रत आयशा रजि०, हज़रत अनस रजि०, हज़रत हिन्द रजि० बिन अबी हाला आदि जो मुद्दतों आप सल्ल० की खिदमत में रहे हैं उन सबका बयान और मतैक्य है कि आप सल्ल० नर्म मिजाज़, खुश अखलाक और नेको सीरत (उत्तम आचरण वाले) थे। आप का चेहरा हंसता था। वकार व मतानत (गंभीरता) से बात करते थे।

मामूल यह था कि किसी से मिलते तो हमेशा पहले खुद सलाम व मुसाफः फ़रमाते थे। कोई झुक कर आप के कान में कुछ बात कहता तो उस वक्त तक उसकी तरफ से मुख न फेरते जब तक वह खुद मुंह न हटा ले। मुसाफः में भी यही मामूल था अर्थात किसी से हाथ मिलाते तो जब तक वह खुद न छोड़ दे, उसका हाथ न छोड़ते, मजलिस में बैठते तो आप के जानू (घुटना) कभी साथ बैठने वालों से आगे निकले हुए न होते।(अबुदाउद व तिरमिजी) अक्सर नौकर चाकर, लौंडी, गुलाम आप की खिदमत में पानी लेकर आते कि आप इस में हाथ डाल दें ताकि मुतबर्रिक (पुनीत) हो जाए, जाड़ों का दिन और सुबह का वक्त होता तब भी आप सल्ल० कभी इन्कार न फरमाते। (मुस्लिम)

एक दफ़ा आप सल्ल० सअद रजि० बिन एबादः से मिलने गये। वापस आने लगे तो उन्होंने अपने बेटे कैस रजि० को साथ कर दिया कि आप के साथ जाए। आप सल्ल० ने कैस से कहा तुम भी मेरे ऊंट पर सवार हो लो। वह बेअदबी के लेहाज़ से हिचकिचाये। आप ने फरमाया कि या सवार हो लो या घर वापस जाओ। वह वापस चले आये। (अबूदाउद)

एक दफ़ा नजाशी के यहां से एक सिफारत (दूत, शिष्टमण्डल) आई आप सल्ल० ने अपने यहां उसको मेहमान रखा ओर खुद मेहमानदारी के तमाम काम अंजाम दिये। सहाबः ने अर्ज़ की कि हम यह ख़िदमत अंजाम देंगे। इरशाद हुआ कि इन लोगों ने मेरे दोस्तों की सेवा की है इसलिये मैं खुद इनकी सेवा करना चाहता हूं।

(शरह शिफ़ाये काज़ी अयाज़)

उत्बान रजि० बिन मालिक जो बदर के असहाब (साथियों) में थे, उन की बीनाई (आंख की रौशनी) में फर्क आ गया था, आप सल्ल० की खिदमत में आकर दरख़्वास्त की कि मैं अपने मुहल्ले की मस्जिद में नमाज पढ़ाता हूं लेकिन जब बारिश हो जाती है तो मस्जिद जाना मुश्किल हो जाता है, इसलिए अगर आप सल्ल० मेरे घर में तशरीफ लाकर नमाज पढ़ लेते तो मै उसी जगह को सज्दः गाह बना लेता। दूसरे दिन सुबह के वक्त आप सल्ल० हज़रत अबू बक्र रजि० को साथ लेकर उनके घर गये और दरवाजः पर ठहर कर इजाजत मांगी, अन्दर से जवाब आया तो घर में तशरीफ ले गये और मालूम किया कि कहां नमाज पढ़ूँ? जगह बता दी। आप सल्ल० ने तकबीर कहकर दो रकअत नमाज अदा की। नमाज के बाद लोगों ने खाने के लिए इसरार किया। खज़ीरः एक खाना होता है, क्रीम पर आटा छिड़क कर तैयार करते हैं, वह सामने आया। मुहल्ले के तमाम लोग खाने में शरीक हुए। हाजिरीन में से किसी ने कहा कि मालिक बिन दहनश नजर नहीं आते। एक ने कहा व मुनाफिक है। इरशाद फरमाया यह न कहो। वह लाइलाहाइल्लल्लाह कहते हैं। लोगों ने कहा 'हाँ'! इनका मैलान (झुकाव) मुनाफिकीन की तरफ है। आप सल्ल० ने फरमाया जो शख्स खुदा की मर्जी के लिए लाइलाहाइल्लल्लाह कहता है, खुदा उस पर आग को हराम कर देता है। (बुखारी)

इब्तेदा–ए–हिज़रत में खुद आप सल्ल० और तमाम मुहाजिरीन अन्सार के घर में मेहमान रहे थे। दस दस आदमियों की एक एक टोली एक एक घर में मेहमान उतारी गई थी। मिकदाद रजि० बिन अल असवद कहते हैं कि मैं उस टोली में था जिस में आप सल्ल० खुद शामिल थे। घर में चन्द बकरियां थीं जिन के दूध पर गुजारा था। दूध दुह चुकता तो सब लोग अपने अपने हिस्से का पी लेते थे और आप सल्ल० के प्याले में छोड़ देते। एक रात की घटना है कि आप सल्ल० के आने में देर हुई। लोग दूध पीकर सो रहे। आप ने आकर देखा तो प्याला खाली पाया। खामोश रहे। फिर फरमाया खुदा या जो आज खिला दे उसको तू भी खिला देना। हज़रत मिकदाद रजि० छुरी लेकर

खड़े हुए कि बकरी को जिबह करके गोश्त पकायें। आप सल्ल० ने रोका और बकरी को दोबारा दुह कर जो कुछ निकला उसी को पीकर सो रहे। (मसनद इब्न हंबल) और किसी को इस बात पर मलामत न की।

अबू शोऐब रजि० एक अन्सारी थे। उनका गुलाम बाजार में गोश्त की दुकान रखता था। एंक दिन वह आप सल्ल० के पास आये। आप सल्ल० सहाबः के हल्कः में तशरीफ फरमा थे, और चेहरे से भूख का असर पैदा था। अबू शोऐब रजि० ने जाकर गुलाम से कहा कि पांच आदमियों का खाना तैयार करो। खाना तैयार हो चुका तो आप सल्ल० से दरख्वास्त की कि सहाबः के साथ तशरीफ ले आयें। कुल पांच आदमी थे। राह में एक और शख्स साथ हो लिया। आप सल्ल० ने अबू शोऐब से कहा यह शख्स बे कहे साथ हो लिया है, तुम इजाजत दो तो यह भी साथ आये, वरनः रूख्सत कर दिया जाये। उन्होंने कहा आप उनको भी साथ लायें। (बुखारी)

उकबः रजि० बिन आमिर एक सहाबी थे। एक दफा आँहजरत सल्ल० पहाड़ के दर्रे में ऊंट पर सवार जा रहे थे। यह भी साथ थे। आप ने उन से कहा कि आओ सवार हो लो। इस को गुस्ताखी (दुःसाहस) समझा कि अल्लाह के रसूल को पैदल कर खुद सवार हो। आप सल्ल० ने दोबार कहा। अब इन्कार करना उचित न था। आप सल्ल० उतर पड़े और यह सवार हुए। (निसाई)

सत्संगत में लोगों की नागवार बातों को सहन करते और इस का इजहार (अभिव्यक्ति) ने करते। हज़रत ज़ैनब रजि० से जब निकाह हुआ और दावते वलीमः की तो कुछ लोग खाना खाकर वहीं बैठे रहे उस समय पर्दे का हुक्म नाजिल नहीं हुआ था और हज़रत ज़ैनब रजि० भी मजलिस में शरीक थीं। आप चाहते थे कि लोग उठ जायें। लेकिन जबान से कुछ नहीं फरमाते थे। लोगों ने कुछ खयाल न किया। आप उठकर हज़रत आयशा के हुजरे (कमरे) तक गये। वापस आये तो उसी तरह मजमा मौजूद था। फिर वापस चले गये और दोबारा तशरीफ़ लाये। पर्दा की आयत इसी मौक़े पर नाज़िल हुई। (बुखारी)

गजब–ए–हुनैन से वापस आ रहे थे कि राह में नमाज का वक्त आ गया। हस्बे दस्तूर (यथा नियम) ठहर गये। मुअज़्ज़िन ने अज़ान दी। अबू महजूरः जो उस वक्त तक इस्लाम नहीं लाये थे, कुछ दोस्तों के साथ गश्त लगा रहे थे। अज़ान सुनकर सब ने चिल्ला चिल्ला कर हंसी के तौर पर अज़ान की नकल उतारनी शुरू की। आप सल्ल० ने सबको बुलवाकर एक एक से अजान कहलवाई। अबू महजूरः की आवाज सुरीली थी उन की आवाज पसन्द आई। सामने बिठाकर सर पर हाथ फेरा और बरकत के लिए दुआ की। फिर उनको अज़ान सिखला कर इरशद फ़रमाया कि जाओ इसी तरह हरम में अज़ान दिया करना।

(दारे कुतिनी जिल्द एक पेज ८६)

एक सहाबी का बयान है कि बचपन में अन्सार के नखलिस्तान में चला जाता और ढीलों से मार कर खजूरें गिराता। लोग मुझकों आप सल्ल० के पास ले गये। आप ने पूछा ढीले क्यों चलते हो? मैंने कहा खजूरों के लिए इरशाद फरमाया ज़मीन पर टपकी हुई खजूरें खा लिया करो। ढीले न मारो। यह कहकर मेरे सर पर हाथ फेरा और दुआ दी। (अबूदाउद)

एबाद बिन शरजील मदीना में एक साहिब थे। एक दफा क़हत (अकाल) पड़ा और भूख की हालत में एक बाग़ में घुस गये, और फल तोड़ कर कुछ खाये, कुछ दामन में रख लिए। बाग़ के मालिक को मालूम हुआ तो उसने आकर मारा और कपड़े उतरवा लिये। यह आप सल्ल० के पास शिकायत लेकर आये। शिकायत जिसके खिलाफ थी वह भी साथ था। आप ने उसे समझाया, यह जाहिल (अनभिक्ष) था इस को तालीम देना था, यह भूखा था इसको खाना खिलाना था, यह कहकर कपड़े वापस दिलवाये, और साठ सआ (एक सआ = २३४ तोला अर्थात दो किलो ७१५ ग्राम का वजन) गल्ला अपने पास से दिया।

(अबूदाउद) (साठ सआ, १६३ किलो)

यहूद का दस्तूर था कि औरतों को जब हैज़ (मासिक धर्म) आता तो उन दिनों उनको घरों से निकाल देते और उनके साथ खाना पीना छोड़ देते। आप सल्ल० जब मदीना आये तो अन्सार ने आप से इसके बारे में सवाल किया। इस पर यह आयत उतरी कि इस हालत में हम बिस्तरी नाजायज़ है। इस बिना पर आप ने हुक्म दिया कि हम बिस्तरी के अलावा कोई चीज़ मना नहीं। यहूदियों ने आप का हुक्म सुना तो बोले कि यह शख्स बात बात में हमारा विरोध करता है। सहाबः आप की खिदमत में आये कि यहूद जब यह कहते हैं तो हम हमबिस्तरी भी क्यों न करें। आपका चेहरा गुस्सा से लाल हो गया। दोनों साहिब चले गये। आप ने उनके पास कुछ खाने की चीजें भेजीं। उस वक्त उनको तसल्ली हुई कि आप

नाराज न थे। (अबूदाउद)

किसी शख्स की कोई बात नापसन्द आती तो अक्सर उसके सामने उसका जिक्र न फरमाते। एक दफा एक साहिब अरब के दस्तूर के मुताबिक जाफ़रान लगाकर खिदमत में हाजिर हुए। आप ने कुछ न कहा, जब वह उठकर चले गये तो उन्होंने लोगों से कहा उनसे कह देना कि यह रंग धो डालें। (अबू दाउद)

एक दफा एक शख्स ने हाजिर होने की इजाजत चाही। आप ने फरमाया अच्छा आने दो। वह अपने कबीला का अच्छा आदमी नहीं था लेकिन जब वह हाज़िर हुआ तो बड़ी नर्मी के साथ उससे बात की। हज़रत आयशा को इस पर तअज्जुब हुआ और आप से पूछा कि आप तो उसको अच्छा नहीं समझते थे, फिर ऐसे मेहरबान होकर उसके साथ बात किया। आप ने फरमाया खुदा के नजदीक सबसे बुरा वह शख्स है जिसकी बदजबानी की वजह से लोग उससे मिलना जुलना छोड़ दें। (बुखारी व अबू दाउद) यहूद जिस कदर कठोर और इस्लाम के दुश्मन थे उसका अन्दाजः पिछले वाकयात से हो चुका होगा फिर भी आप सल्ल० इन संगदिलों के साथ हमेशा नर्मी का बर्ताव करते और उनसे सदव्यवहार करते। सख्त से सख्त गुस्सा की हालत में सिर्फ इस कदर फरमाते कि इस की पेशानी (माथा) खाक आलूद (धूल धूसरित) हो। (अबू बुलमुफरद)

हज़रत जाबिर रजि० बिन अब्दुल्ला अन्सारी कहते हैं कि मदीना में एक यहूदी रहता था जिस से मैं कर्ज लिया करता था। एक साल इत्तेफाक से खजूरें नहीं फलीं और कर्ज अदा न हो सका। इस पर पूरा साल गुजर गया। बहार आई तो यहूदी ने तकाजा शुरू किया। अब के भी फल कम आये। मैंने आइन्दा फसल की मुहलम मांगी। उसने इन्कार किया। मैंने आँहज़रत सल्ल० से आकर तनाम बात बयान की। आप चन्द सहाबा के साथ खुद यहूदी के घर तशरीफ ले गये और समझाया कि मुहलत दे दो। उसने कहा कि अबुल कासिम! मैं कभी मुहलत न दूंगा। आप नखलिस्तान में तशरीफ ले गये और एक चक्कर लगाकर फिर यहूदी के पास आये और उसेस बात की। लेकिन वह किसी तरह राजी न हुआ। आखिर में आप ने मुझ से कहा कि चबूतरे पर फर्श बिछा दो, उस पर आराम फरमाया और सो गये। सोकर उठे तो फिर यहूदी से कहा कि मुहलत दे दो। वह संगदिल अब भी न माना। आप पेड़ों के झुंड में जाकर खड़े हो गये और जाबिर रजि० से कहा खजूरें तोड़नी शुरू करो। आप सल्ल० की बरकत से इतनी खजूरें निकलीं कि यहूदी का कर्ज़ अदा करके भी बच रहीं। (बुखारी)

मजलिसे नबवी में जगह बहुत कम होती थी। जो लोग पहले से आकर बैठ जाते थे उनके बाद जगह बाकी नहीं रहती थी ऐसे मौक़े पर अगर कोई आ जाता तो उस के लिए आप खुद अपनी मुबारक चादर बिछा देते थे। एक दफा जाराना के मकाम पर आप तशरीफ फ़रमा थे और अपने हाथों से लोगों को गोश्त तक़सीम कर रहे थे इतने में एक औरत आई और आपके पास चली गई। आप सल्ल० ने देखा तो उसे बड़ी इज़्ज़त दी अपनी मुबारक चादर उसके लिए बिछा दी। रावी (बयान करने वाला) कहता है कि मैंने मालूम किया कि यह कौन औरत थी? तो लोगों ने कहा कि यह हुजूर सल्ल० की रिजाई (जो किसी दूसरी औरत के दूध पीने में शरीक हो) माँ थी। (अबूदाउद)

इसी तरह एक दफा का जिक्र है कि आप सल्ल० तशरीफ फरमा थे कि आप के रिजाई वालद आये। आपने उनके लिए चादर का एक कोना बिछा दिया, और रिजाई मां आईं तो आप उठ खडे हुए और उनको अपने सामने बिठा लिया। (अबूदाउद)

हज़रत अबूज़र रजि० मशहूर सहाबी हैं। एक दफ़ा उन को बुला भेजा तो वह घर में नहीं मिले। थोड़ी देर के बाद खिदमत में हाजिर हुए तो आप लेटे हुए थे, उन को देखकर उठ खड़े हुए और अपने सीने से लगा लिया। (अबूदाउद) हज़रत जाफ़र भी जब हब्शा से वापस आये तो उनको गले लगा लिया। और उनके माथे को चूम लिया। (अबूदाउद) सलाम करने में पहल करते। रास्ते मे जब चलते तो मर्द, औरतें, बच्चे जो सामने आते उनको सलाम करते। एक बार आप रास्ते से गुजर रहे थे एक जगह मुसलमान और मुनाफिक व काफिर एकजा बैठे मिले, आप ने सबको सलाम किया। (बुखारी)

किसी की कोई बात बुरी मालूम होती तो मजलिस में नाम लेकर उसका जिक्र नहीं करते थे बल्कि फ़रमाते थे कि लोग ऐसा करते हैं, लोगा ऐसा कहते हैं, बाज़ लोगों को यह आदत है। यह तरीक़ा इसलिए इख़्तियार फरमाते कि मखसूस शख्स (व्यक्ति विशेष) की ज़िल्लत (अपमान) न हो, और उसके एहसासे गैरत में कमी आ जाये। (जारी)

रूपान्तरकार : मो० हसन अंसारी

मौसमे गरमा का तोहफ़ा

खरबूज़ा

गुफ़रान नदवी

तरबूज़ की तरह खरबूजा भी गर्मियों का फल है, अलबत्ता दोनों की खासियत (गुण) अलग–अलग हैं, तरबूज तीसरे दर्जे में सर्द तर (शीतल) होता है जबकि खरबूजा दूसरे दर्जे में गर्म तर।

खरबूजह पेशाब लाने वाला मुक़व्वी (शक्ति वर्द्धक) मुलय्यिन और पथरी तोड़ने वाली दवा है, गुर्दों और मसाने (मूत्र कोष) की पथरी, कब्ज और शरीर में सोडियम जमा हो जाने की वजह से पेशाब की कमी में इसका प्रयोग लाभदायक है। खरबूजह विटामिन–ए से माला माल होता है। और प्रत्येक १०० ग्राम खरबूजे में विटामिन ए की २४०० अन्तर्राष्ट्रीय इकाइयां (आईयू) पाई जाती हैं। लिहाजा इसका पूर्ण प्रयोग विटामिन–ए–की कमी से होने वाली तमाम बीमारियों से बचाता है फिर भी सुबह सवेरे और रात में इसके प्रयोग से क़ै और बदहज्मी का अन्देशा है।

आमतौर पर लोग खरबूज़े का इस्तेमाल शकर या चीनी मिलाकर कर करते हैं। जो गलत है शहद या नमक काली मिर्च मिलाकर ख़रबूज़े का इस्तेमाल ज़ियादह स्वस्थ वर्द्धक है, बच्चे की पैदाइश के बाद खरबूजे का इस्तेमाल करने से मां के दूध में इज़ाफ़ा होता है हरियाली मायल पीले गूदे की किस्म का पुख़्ता खरबूज़ा दिल को ताकत देता है और बहुत दिनों तक उसको ठीक रखता है। एक्ज़ीमा में पुख़तह खरबूजे का गूदा लाभदायक है। इसी तरह दूसरे चर्म रोगों के इलाज के लिए उसे गुड़ के साथ खाया जाता है।

छिलका : खरबूजे का छिलका पुटाश, नमकियात से भरा होता है। मसाने (मूत्र कोष) की पथरी तोड़ने के लिए कच्चे नारियल के साथ छिलके का जुशान्दा या अरक (डिकोक्शन) दिया जाता है जो बहुत शीघ्र प्रभावित होता हे, छिलके को पीसकर उसकी लेई या पेस्ट झुर्रियां और झाइयां दूर करने के लिए चेहरे पर लगाया जाता है सूखे छिलके के कुछ टुकड़े गोश्त पकाते समय उसमें डालने से गोश्त के रेशे नर्म पड़ जाते हैं और सालन का स्वाद बढ़ जाता है।

बीज : खरबूजे के बीच पेशाब लाने के लिए जिन्सी जोश (यौन उत्साह) पैदा करने के लिए बहुत लाभप्रद हैं, तरबूज के बीजों के दूधिया अरक की तरह खरबूजे के बीच भी शरीर के यूरिक तेजाब की बड़ी मात्रा और मसाने की पथरी घुलाने के लिए प्रयोग किये जाते हैं। खरबूजे के बीजों का अरक खजूर और शहद के साथ प्रयोग करने से नुत्फा (वीर्य) गाढ़ा होता है उसके निकलने, यौन रूचि और शक्ति में बढ़ोतरी होती है।

चेहरे पर बीजों का पेस्ट लगाने से रंग सफेद होता है, आब्लों और फोड़ों वगैरह पर यह पेस्ट लगाने से आराम मिलता है और मवाद पड़कर जल्दी ठीक हो जाता है।

गुमशुदा

महेन्द्र तिवारी

वही चिरपरिचित,
पतली–पतली बाला
युगों की उम्र से आबद्ध
सच्चरित्रता की बेदाग साड़ी में अवलिप्त
गोपेश्वर बाजार से,
मिट्टी के तेल की तरह
नवयुग के मारकेट में
गुम हो गयी है।
सुना है –
असभ्यता की पगडंडी की ओर
अनैतिकता की मोटर में
सवार, भौतिकवादी अपराधी ही
उसे अपहृत करने में समर्थ हुए हैं
सुनकर व्यथित हुआ मन,
छाया मौन
किंकर्तव्यविमूढ़
प्रार्थना है !
जो उसे आधुनिकता के घर में
असभ्य की पगडंडी से बचाकर
लाने में,
समर्थ होगा
उसको मार्ग व्यय के अतिरिक्त
पुरस्कार भी दिया जायगा,
अबला का नाम – 'मानवता'।

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

❐ प्राचीनतम कुर्आनी प्रतियां

दुन्या भर के पुस्तकालयों और म्यूजियम में प्राचीनतम कुर्आनी नुस्खे (प्रतियां) उपलब्ध हो रहे हैं। यूनिस्को ने पहली सदी हिजरी के लिखे हुए चालीस कुर्आनी पांडुलिपियों की सी० डी० तैयार की है। मशहद ईरान के पुस्तकालय में ग्यारह हजार प्राचीन कुर्आनी पांडुलिपियां हैं जो इस संसार का सबसे बड़ा कलेक्शन ख़्याल किया जाता है। इसके अतिरिक्त योरोशलम के म्यूजियम में भी विभिन्न साईज और मोटाई और विभिन्न जमाने के कुर्आनी पांडुलिपियों का काफी भण्डार है।

सऊदी अरब में एक व्यक्ति के पास तेरह सौ साल पुराना कुर्आन शरीफ की एक हस्तलिखित पांडुलिपि है। इस के प्रथम पृष्ठ पर ११६ हिजरी लिखा है। इस पांडुलिपि के मालिक ने चन्द वर्ष पहले एक बूढ़े शैख से इसे मंहगी क़ीमत पर खरीदा था। यह कुर्आन चमड़े पर लिखा हुआ है जो इसके प्राचीन होने का सुबूत और इस्लाम के प्रारम्भिक लेखन कला का नमूना है। इसकी लिखावट बहुत सुन्दर है। यह प्राकृतिक कागज (चमड़े) पर लिखा हुआ है। विशषग्य उस के लिखने के युग के बारे में खोज कर रहे हैं।

(मआरिफ)

❐ सऊदी अरब में रवायती ढंग से पानी की तलाश

सऊदी अरब में प्राचीन काल से एक रवायत चली आ रही है जिसे लोग 'अस्सनास' के नाम से जानते है जिसके द्वारा वह जमीने खोदे बिना एक घरेलू यंत्र के द्वारा सऊदी अरब की पत्थरीली जमीन में पानी की मौजूदगी का पता लगाते हैं। यह कला सऊदी अरेबिया में सदियों से चली आ रही है। कुछ विशेषज्ञ इस कला का सम्बन्ध हज़रत इस्माईल अलैहिस्सला से जोड़ते हैं जिनकी ऐड़ियों से मक्का की पत्थरीली ज़मान में ज़मज़म का चश्मा फूट रहा था।

सऊदी अरब के किसान कुँआ खोदने या ट्यूबवेल लगाने से पहले पानी की तलाश के लिए आज के साइंस के युग में भी इस कला (फ़न) के विशेषज्ञों की सहायता लेते हैं। जबकि सऊदी कृषि में सौ फीसदी साइंसी यंत्रों का इस्तेमाल करता है। इस फ़न के माहिरीन यह भी बताते हैं कि यहां जो पानी मौजूद है वह खारा है या मीठा।

शाह सऊद यूनिवर्सिटी का विद्यार्थी अलहैयान ने अपने पिता से यह कला सीखी है। वह एक घरेलू यंत्र, जिसको उसके पिता ने ईजाद किया था, कि मदद से और उस स्थान पर चल कर चट्टानों के नीचे पानी का पता लगा लेता है। उसका कहना है कि इस कला में यंत्र के अतिरिक्त इंसान की कुदरती ज़ेहानत और पांव का चट्टानों से स्पर्श वह विशेष तरीका है जो काम आता है। उसने यह कला अपने पिता से सीखी थी। किसान, विल्डर और रहाईशी मकान बनाने वाले उसे दूर दूर से जमीन के नीचे पानी का पता लगाने के लिए बुलाते हैं।

❐ काहिरा की तमाम मस्जिद में एक ही अज़ान

क़ाहिरा की सभी मस्जिद में अब एक ही अज़ान होगी। मिस्र के वक्फ़ मंत्रालय ने फैसला किया है कि बीचों बीच में स्थित मस्जिद उमर का मोअज्ज़िन अज़ान देगा जिसे शहर की दूसरी मस्जिदों में भी परिसारण किया जाएगा। यह व्यवस्था पहले क़ाहिरा में शुरू होगी। बाद में देश के अन्य क्षेत्रों में भी लागू कर दिया जाएगा।

❐ रोबोट बना डाक्टर

सालों की जद्दोजहद के बाद आखिर डाक्टरों ने आपरेशन के दौरान होने वाली गल्तियों को दूर करने में कामयाबी हासिल कर ही ली। अब मरीजों के आपरेशन ऐसे रोबोट करेंगे जिनकी समझ इन्सानों की तरह होगी। यह इंटेलीजेंस रोबोट चिकित्सा क्षेत्र में जल्दी ही कदम रखने जा रहा है।

अमेरिका के कोरनेल विश्वविद्यालय में रोबोटिक प्रोस्टेक्टमी एंड यूरोलाजी आनकोलाज़ी आउटकम के डा० आशुतोष तिवारी इन इंटेलिजेंस रोबोट पर काम कर रहे हैं। डाक्टर आपरेशन में गलती कर सकते हैं और अकसर कर भी जाते हैं। परन्तु रोबोट गलती नहीं कर सकता। रोबोट का इस्तेमाल अब कई तरह से सर्जरी में शुरू हो गया है। भारत में भी दिल की सर्जरी में रोबोट का इस्तेमाल किया गया है पर अन्य आपरेशन में इसका उपयोग अभी शुरू नहीं हो पाया है। उधर अमेरिका में प्रोस्टेट गलैंड का आपरेशन भी अब रोबोट करने लगा है। अभी तक रोबोट से जो सर्जरी की जाती है उसमें सर्जन एक कन्ट्रोल यूनिट पर बैठ जाता है। सारा कन्ट्रोल भी डाक्टर के हाथ में ही होता है। वह माइक्रोस्कोपिक स्क्रीन में देखकर दूर लेटे मरीज की आपरेशन करता रहता है। आपरेशन टेबल पर लेटे मरीज के समीप हाथनुमा तीन रोबोट होते हैं, एक चौथा रोबोट भी होता है जिसमें कैमरा लगा होता है। इस कैमरेनुमा आंख से ही शरीर के भीतरी हिस्सा त्रिआयामी रूप में दिखायी देता रहता है। दूर से बैठे ही सर्जन रोबोट को निर्देशित करते हुए सर्जरी कर देता है। डा० आशुतोष

(शेष पृष्ठ २१ पर)